Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَلَا تَقُوْلَنَّ لِشَایْءٍ
اِنِّیْ فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا
اِلَّآ اَنْ یَّشَآءَ اللّٰهُ

(अल् कहफ़ : 24 -25)

अनुवाद : और कदापि किसी वस्तु से संबंधित यह न कहा कर के मेंकल उसे ज़रूर करूंगा सिवाए उस के कि अल्लाह चाहे मज़लूम की बद्दुआ से बचोगे।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِیْمِ وَعَلٰی عَبْدِهِ الْمَسِیْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 8
अंक-40

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

19 रबीउल अव्वल 1445 हिज्री कमरी, 05 ईखा 1402 हिज्री शम्सी, 05 अक्टूबर 2023 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

मज़लूम की बद्दुआ से बचो

(2448) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत हैकि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत माज़ रज़ियल्लाहु अन्हो को यमन की तरफ़ भेजा और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : मज़लूम की बद्दुआ से बचोगे क्योंकि उसके और अल्लाह के मध्य कोई रोक नहीं।

(2449) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिस शख़्स ने दूसरे की बेइज़्ज़ती की हो या कोई और ज़ुलम किया हो तो चाहिए कि ज़ुलम करने वाला उससे आज दुनिया में माफ़ करा ले, पूर्व इसके कि जब न दीनार होगा न दिरहम। अगर उसका कोई नेक अमल होगा तो जिस क़दर मज़लूम पर ज़ुलम होगा, उस के अनुसार उसके नेक-आमाल से ले लिया जाएगा और अगर उसकी नेकियां हुई तो मज़लूम की बुराईयां लेकर उस ज़ालिम पर डाल दी जाएँगी।

(सही बुख़ारी, भाग 4, किताब अल् मज़ालिम, प्रकाशन 2008 कादियान)

★ ★ ★

नेकियों की माँ अख़लाक़ ही है, ख़ैर का पहला दर्जा जहां से इन्सान क़ुव्वत पाता है अख़लाक़ है

मेरा तो यह धर्म है कि दुनिया में हर एक चीज़ काम आती है
परंतु इन्सान जो अख़लाक़-ए-फाज़िला को हासिल करके लाभप्रद हस्ती नहीं बनता, ऐसा हो जाता है कि वह किसी भी काम आ सकता

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

अख़लाक़ नेकियों की चाबी है

अख़लाक़ दूसरी नेकियों की चाबी है। जो लोग अख़लाक़ की इस्लाह नहीं करते वह धीरे धीरे बे ख़ैर होजाते हैं। मेरा तो यह धर्म है कि दुनिया में हर एक चीज़ काम आती है। ज़हर और गंदगी भी काम आती है। इस्ट्रकेना भी काम आता है। पट्ठों पर अपना प्रभाव डालता है। परंतु इन्सान जो अख़लाक़-ए-फाज़िला को हासिल करके लाभप्रद हस्ती नहीं बनता, ऐसा हो जाता है कि वह किसी भी काम नहीं आ सकता। मुर्दार हैवान से भी बदतर हो जाता है क्योंकि उसकी तो खाल और हड्डियां भी काम आ जाती हैं। उस की तो खाल भी काम नहीं आती। और यही वह मुक़ाम होता है जहां इन्सान بَلْ هُمْ اَضَلُّ का उदाहरण हो जाता है। अतः याद रखो कि अख़लाक़ की दुरुस्ती बहुत ज़रूरी चीज़ है, क्योंकि नेकियों की माँ अख़लाक़ है।

ख़ैर का पहला दर्जा जहां से इन्सान क़ुव्वत पाता है अख़लाक़ है। दो शब्द हैं, एक ख़ल्क़ और दूसरा ख़ुलक। ख़ल्क़ ज़ाहिरी पैदाइश का नाम है और ख़ुलक बातिनी पैदाइश का। जैसे ज़ाहिर में कोई ख़ूबसूरत होता है और कोई बहुत ही बदसूरत। इसी तरह पर कोई अंदरूनी पैदाइश में निहायत हुसैन और दिलरुबा होता है और कोई अंदर से कोढ़ी और कुष्ठ रोगी की तरह घृणित। लेकिन ज़ाहिरी सूरत चूँकि नज़र आती है, इसलिए हर शख़्स देखते ही पहचान लेता है और ख़ूबसूरती को पसंद करता है और नहीं चाहता कि बदसूरत और चरित्रहीन हो, परंतु चूँकि उसको देखता है इसलिए उसको पसंद करता है और ख़ुलक को चूँकि देखा नहीं, इसलिए उसकी ख़ूबी से नाआशना हो कर उसको नहीं चाहता। एक अंधे के लिए ख़ूबसूरती और बदसूरती दोनों एक ही हैं। इसी तरह पर वह इन्सान जिसकी नज़र अंदरून तक नहीं पहुँचती, उस अंधे ही की भांति है। ख़ल्क़ तो एक स्पष्ट बात है। परंतु ख़ुलक एक नज़री मसला है। अगर अख़लाक़ी बदियाँ और उनकी लानत मालूम हो तो हक़ीक़त खुले। उद्देश्य अख़लाक़ी ख़ूबसूरती एक ऐसी ख़ूबसूरती है जिसको हक़ीक़ी ख़ूबसूरती कहना चाहिए। बहुत थोड़े हैं जो उसको पहचानते हैं। अख़लाक़ नेकियों की चाबी है। जैसे बाग़ के दरवाज़े पर तआला हो। दूर से फल फूल नज़र आते हैं। परंतु अंदर नहीं जा सकते। लेकिन अगर तआला खोल दिया जाए , तो अंदर जाकर पूरी हक़ीक़त मालूम होती है और दिल-ओ-दिमाग़ में एक आनंद और ताज़गी आती है। अख़लाक़ को हासिल करना गोया इस ताले को खोल कर अंदर दाख़िल होना है।

(मल्फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 481 प्रकाशन 2018 कादियान)

मसीही क़ौम की इबतेदा तो इस तरह हुई थी कि वह बुतपरस्ती के ख़िलाफ़ जिहाद करते थे और शिर्क से बचने के लिए उन्होंने सदियों तक बड़ी-बड़ी क़ुर्बानियां कीं
लेकिन अंत इस प्रकार हुआ कि असली दीन का कोई निशान भी अब मसीहियों में नहीं पाया जाता

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो कहफ़ और अस्हाब-ए-कहफ़ की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

कहफ़ के बारे में संक्षिप्त कुछ घटनाएं बताता हूँ, जैसा कि में वर्णन कर चुका हूँ कहफ़ से मुराद कीटा कोमबज़ है जो ज़मीन के अंदर तेख़ानों का नाम है। रोमियों और यहूद में रिवाज था कि वह मर्दों को कमरों में रखते थे। रूमी हुकूमत के बड़े बड़े शहरों में शहरों से बाहर ऐसी जगहें बनी हुई थीं और कीटा कोमबज़ कहलाती थीं। जब मसीहियों पर ज़ुलम हुए तो उन्होंने जान बचाने के लिए इन क़ब्रिस्तानों में पनाह लेनी शुरू की जिसकी दो वजहें मालूम होती हैं। एक तो यह कि ज़मीन दोज़ कमरों में वह आसानी से छिप सकते थे और बैठने, सोने और मौसम की शिद्दत से महफ़ूज़ रहने का भी सामान होता था। दूसरे इस लिए भी कि आम तौर पर लोग क़ब्रिस्तान से डरते हैं और इस तरह लोगों की नज़रों से बचने की वहां संभावना अधिक थी। यह कीटा कोमबज़ रुम के पास सिकंदरिया जो मिस्र का शहर है उस के पास सिसली में, मालटा में , निपल्ज़ के पास उस वक़्त तक दरयाफ़त हुए हैं। मिस्टर बंजमन स्कॉट अपनी किताब "दी कैटा कोम्बज़ एट रूम" में लिखते हैंकि "मेरी राय है कि इस इबतेदाई ज़माना में भी (जब पौलोस रुम गया है)ईसाई अपनी हिफ़ाज़त के ख़्याल से लोगों के ग़ुस्सा और यहूदियों के ज़ुल्मों और रूमी हुकूमत के मज़ालिम से बचने के लिए इन तेख़ानों में पनाह लिया करते थे।" (पृष्ठ : 63) फिर वे ज़रा आगे चल कर लिखते हैं "वह यक़ीनन मजबूर थे कि गढ़ों और ज़मीन के नीचेग़ारों में पनाह लेते ।"उस जगह लेखक ने तेख़ानों के लिए cave का शब्द प्रयोग किया है जो अरबी ज़बान के शब्द कहफ़ का ही बिगड़ा हुआहै। गोया इस तरह इस अंग्रेज़ लेखक

पृष्ठ 8 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

बैअत का हक़ अदा करना कोई मामूली बात नहीं। यह तभी अदा हो सकता है जब हम हर वक़त अल्लाह तआला के अहकामात के अधीन चलने की कोशिश करें

जलसा सालाना में शामिल होने का एक बड़ा उद्देश्य यह है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैत में शामिल होने वाले दीनी इलम सीखें, रूहानियत में तरक़्क़ी करें, अल्लाह तआला से ताल्लुक़ और
मुहब्बत में बढ़ें, रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुकम्मल पैरवी करने वाले हों, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत का ताल्लुक़ हो, दुनिया की मुहब्बत ठंडी हो और धर्म सब से प्रथम हो

क्या हमने अपनी रुहानी हालतों को बेहतर करने के साथ अपने बच्चों को भी दीन से जोड़े रखने की ख़ास कोशिश की
ताकि उन मख़लेसीन में शामिल हो सकें जैसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम चाहते हैं, अगर की तो यही वह वास्तविक शुक्राना है जो सौ साल पूरे होने पर
हम अदा करने वाले होंगे और जिसकी एक अहमदी से आशा की जा सकती है, अगर नहीं तो केवल दुनियावी रस्म-ओ-रिवाज के मुताबिक़ सौ साल पूरे होने पर ख़ुशी बेफ़ायदा है

हर विषय में कोई हो दीन को मुक़द्दम करें, दुनिया उद्देश्यों को प्राप्त करना न हो,अस्ल उद्देश्य दीन हो, फिर दुनिया के काम भी दीन ही के होंगे

"जो इल्मी तरक़्क़ी चाहता है उस को चाहिए कि क़ुरआन शरीफ़ को ग़ौर से पढ़ें"

हमें जायज़ा लेना चाहिए कि कितने हैं जो ग़ौर करके क़ुरआन-ए-करीम को पढ़ते हैं, इस की तिलावत करते हैं और फिर इस पर अमल करने की कोशिश करते हैं

विश्वास के साथ हर अहमदी को क़ुरआन-ए-करीम को पढ़ना चाहिए, जहां यह हमारी तर्बीयत के लिए रहनुमा है वहां ग़ैरों के एतराज़ों के उत्तर देने के लिए भी एक हथियार है

हर अहमदी को यह जायज़ा लेना चाहिए कि उसकी नमाज़ की क्या हालत है
अगर हमारी यह हालत दरुस्त हो गई और हमारा अल्लाह तआला से इस तरह ताल्लुक़ क़ायम हो गया तो फिर ही वह हालत है जब हमें हक़ीक़ी ख़ुशी मिलेगी

अगर हम दीनी इलम की तरफ़ तवज्जा दें तो ख़ुदा तआला की हस्ती पर ईमान में भी हम तरक़्क़ी करेंगे
और इस्लाम और अहमदियत की सच्चाई पर भी ईमान में हम बढ़ने वाले होंगे, अपने बच्चों की ईमान की भी हिफ़ाज़त करने वाले होंगे

"जिन लोगों ने मेरा इंकार किया है और जो मुझ पर एतराज़ करते हैं उन्होंने मुझे पहचाना नहीं
और जिसने मुझे स्वीकार किया और फिर एतराज़ रखता है वह और भी बदक़िस्मत है कि देख कर अंधा हुआ, असल बात यह है कि समकालिक भी प्रतिष्ठा को घटा देती है"
"मेरे आने का वास्तविक उद्देश्य और उद्देश्य यही है कि तौहीद, अख़लाक़ और रूहानियत को फैलाऊँ"
जब हम मस्जिदें बना रहे हैं तो उनको आबाद करने की भी एक कोशिश होनी चाहिए

आला अख़लाक़ का इज़हार आपस के ताल्लुक़ात में होना चाहिए

अगली सदी का टार्गेट यही मुख़्तसर लाहे-अमल है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इर्शादात की रोशनी में मैंने वर्णन किया है, हम यह दावा लेकर उठे हैं कि
हमने दुनिया के दिल जीतने हैं, इस दुनिया को ख़ुदा तआला की वहदानियत का क़ायल करना है, दुनिया को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़दमों में ला डालना है
अतः इस हवाले से हम में से हर एक को अपने जायज़े लेने चाहिए और एक नए अज़म के साथ जर्मनी की जमाअत अहमदिया को नई सदी में दाख़िल होना चाहिए कि
हम दीन को दुनिया पर मुक़द्दम रखते हुए अपने इस उद्देश्य को हासिल करने की भर पूर कोशिश करेंगे और अपनी औलादों और नसलों को भी ये नसीहत करते रहेंगे
और उनकी इस तरह तर्बीयत करेंगे कि अल्लाह तआला से ताल्लुक़ की यह जाग एक नसल से दूसरी नसल में लगती चली जाए, अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए
हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज्ञान से परिपूर्ण आदेश की रोशनी में जलसा सालाना में शामिल होंने का उद्देश्य और जमात अहमदिया जर्मनी के लिए नई सदी का टार्गेट

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 01 सितंबर 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَاالضَّآلِّيْنَ

अल्हमदो लिल्लाह आज जमाअत अहमदिया जर्मनी का जलसा सालाना चार साल की पाबंदियों के बाद बड़े पैमाने पर आयोजित हो रहा है। अल्लाह तआला सब जलसे मे शामिल होंने वालों को जलसे के उद्देश्य को प्राप्त करने वाला बनाए और वे इस बात पर ख़ुश न हो जाएं कि अल्लाह तआला ने हमें दुबारा इकट्ठा होने का अवसर दिया है तो एक दूसरे को मिललेंगे, कुछ मज्लिसें लगा लेंगे और बस। नहीं बल्कि एक बहुत बड़ा उद्देश्य है जलसे के आयोजन का जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें बताया है और बड़े दर्द से इस का इज़हार भी किया है वह यह है कि आप बैअत में शामिल होने वाले दीनी इलम सीखें, रूहानियत में तरक़्क़ी करें। अल्लाह तआला से ताल्लुक़ और मुहब्बत में बढ़ें। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुक-म्मल पैरवी करने वाले हों। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत का ताल्लुक़ हो। दुनिया की मुहब्बत ठंडी हो और दीन मुक़द्दम हो।

आप अलैहिस्सलाम एक अवसर पर फ़रमाते हैं :"समस्त मख़लेसीन सिलसिला बैअत में शामिल होने वाले इस आजिज़ पर ज़ाहिर हो कि बैअत करने से उद्देश्य यह है किता दुनिया की मुहब्बत ठंडी हो और अपने मौला करीम और रसूले मक़बूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत दिल पर ग़ालिब आ जाए।" (आसमानी फ़ैसला, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 4 पृष्ठ 351) अतः पहली कोशिश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने वालों की यह होनी चाहिए कि हम इन मख़-लेसीन में शामिल होने वाले हों जिन पर अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्ला-हो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत ग़ालिब आ जाए और हमारी हर कथनी और करनी से इस का इज़हार भी होता हो।

इस वर्ष जमाअत अहमदिया को जर्मनी में क़ायम हुए सौ साल भी हो गए हैं। जर्मन जमाअत के अफ़राद इस बात पर बड़े excitedभी हैं, ख़ुश भी हैं कि हम इस साल जमाअत के क़ियाम के सौ साल पूरा होने पर यह जलसा कर रहे हैं जो जमाअत के सौ साल के क़ियाम का जलसा है। बहुत लोग ख़ुशी का इज़हार करते हैं। निश्चित यह ख़ुशी की बात है कि अल्लाह तआला ने आज से सौ साल पहले हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा इस्लाम का ख़ूबसूरत पैग़ाम इस मुल्क में पहुंचाया है बल्कि आप ज़िंदगी में भी यहां पैग़ाम आ चुका था। इसलिए पैग़ाम आए हुए तो सौ साल से ज़्यादा का समय हो चुका है लेकिन साथ ही हमें यह भी देखना है और सोचना चाहिए कि इन सौ सालों में हमने क्या हासिल किया। हमने अपने ईमानों की किस हद तक हिफ़ाज़त की

जब जमाअत यहां शुरू हुई तो चंद एक लोग थे। फिर पाकिस्तान के हालात बदले, दुनिया के हालात बदले तो बहुत से अहमदी इस मुल्क में आकर आबाद हुए। वे इसलिए यहां आए कि वे अहमदी थे और अहमदी होने की वजह से अपने मुल्क में अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तालीम पर अमल करने और खुल कर उसका इज़हार करने पर उन पर पाबंदियां लगा दी गई थीं। अतः जब यहां आकर उनको ये मज़हबी आज़ादी मिली कि वह खुल कर अपने दीन पर अमल कर सकें तो फिर उन्हें एक ख़ास मेहनत से अपनी हालत में वह पाक तबदीलियां पैदा कर के फिर उन पर क़ायम रहने की कोशिश करनी चाहिए जिनका तक़ाज़ा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी जमाअत से किया है। क्या वह कोशिश हमने की

क्या हमने अपनी रुहानी हालतों को बेहतर करने के साथ अपने बच्चों को भी दीन से जोड़े रखने की ख़ास कोशिश की? ताकि उन मख़लेसीन में शामिल हो सकें जैसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम चाहते हैं। अगर की तो यही वह हक़ीक़ी शुक्राना है जो सौ साल पूरे होने पर हम अदा करने वाले होंगे और जिसकी एक अहमदी से आशा की जा सकती है। अगर नहीं तो सिर्फ दुनियावी रस्म-ओ-रिवाज के मुताबिक़ सौ साल पूरे होने पर ख़ुशी बेफ़ायदा है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने असंख्य जगह अपनी बैअत में आने वालों को अपने अंदर पाक और इन्क़लाबी तबदीलीयां पैदा करने के लिए लाहे-अमल दिया है। उन्हें नसाएह फ़रमाए हैं। अतः अगर हम हक़ीक़ी तौर पर इन मुख़लेसीन में शामिल हैं जो आप की बैअत में आए तो हमें फिर हर वक़त उनकी जुगाली करते रहना चाहिए और फिर अपनी कथनी और करनी का उसके साथ मुवाज़ना भी करते रहना चाहिए कि किस हद तक हम इस उद्देश्य को पूरा कर रहे हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने का उद्देश्य है। कहीं हम इस तरक़्क़ी याफताह दुनिया में आकर अपने इस उद्देश्य को भूल तो नहीं गए। कहीं दुनिया की चका-चौंद ने हमें बैअत के उद्देश्य को भुलाने वाला तो नहीं बना दिया। अगर भुला दिया है तो यह सौ साला जश्न बेफ़ाइदा है

इस वक़्त मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ इर्शादात आपके सामने रखूँगा जो हमें हमारे उद्देश्य की तरफ़ राहनुमाई करने वाले हैं।

सबसे पहले मैं आप अलैहिस्सलाम का ये इरशाद पेश करूँगा जिसमें आप अलै-हिस्सलाम ने फ़रमाया कि हमारी बैअत हम से क्या मांग करती है।

फ़रमाते हैं "यह मत ख़्याल करो कि सिर्फ बैअत कर लेने से ही ख़ुदा राज़ी हो जाता है यह तो सिर्फ पोस्त है।" बाहर की खाल है।"मग़ज़ तो उसके अंदर है। अक्सर क़ानून-ए-क़ुदरत यही है कि एक छिलका होता है और मग़ज़ उस के अंदर होता है। छिलका कोई काम की चीज़ नहीं है मग़ज़ ही लिया जाता है। बाअज़ ऐसे होते हैं कि उनमें मग़ज़ रहता ही नहीं और मुर्ग़ी के हवाई अंडों की तरह जिन में न ज़रदी होती है न सफ़ेदी जो किसी काम नहीं आ सकते और रद्दी की तरह फेंक दिए जाते हैं। हाँ एक दो मिनट तक किसी बच्चे के खेल का माध्यम हो तो हो। इसी तरह पर वे इन्सान जो बैअत और ईमान का दावा करता है अगर वह इन दोनो बातों का मग़ज़ अपने अंदर नहीं रखता तो उसे डरना चाहिए कि एक वक़्त आता है कि वह इस हवाई अंडे की तरह ज़रा सी चोट से चकना-चूर हो कर फेंक दिया जाएगा।" जो पीछे हटते हैं जमात से उनका यही हाल है। इसी तरह फ़रमाया" इसी तरह जो बैअत और ईमान का दावा करता है उको टटोलना चाहिए कि क्या मैं छिलका ही हूँ या मग़ज़?"अपना जायज़ा लेते रहना चाहिए।

"जब तक मग़ज़ पैदा न हो ईमान, मुहब्बत, इताअत, बैअत, एतेक़ाद, इस्लाम के मुरीद का मुद्दई सच्चा मुद्दई नहीं है। याद रखो कि यह सच्ची बात है कि अल्लाह तआला के हुज़ूर मग़ज़ के सिवा छिलके की कुछ भी क़ीमत नहीं।

ख़ूब याद रखो कि मालूम नहीं मौत किस वक़्त आ जाए लेकिन यह निश्चित बात है कि मौत ज़रूर है। अतः निरे दावा पर हरगिज़ किफ़ायत न करो और ख़ुश न हो जाओ वह हरगिज़ हरगिज़ लाभ प्रद चीज़ नहीं। जब तक इन्सान अपने आप पर बहुत मौतें वारिद न करे और बहुत सी तबदीलियों और इन्क़लाबात में से हो कर न निकले वह इन्सानियत के असल उद्देश्य को नहीं पा सकता।" (मल्फ़ूज़ात, भाग 2, पृष्ठ 167 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः बैअत का हक़ अदा करना कोई मामूली बात नहीं। यह तभी अदा हो सकता है जब हम हर वक़त अल्लाह तआला के अहकामात के ताबे चलने की कोशिश करें। दुनियावी आनंद को दूर करके ही इन्सान ऐसा मुक़ाम हासिल कर सकता है। दुनिया में रह कर फिर दीन को मुक़द्दम रखना यही असल जिहाद है जिसकी हमें कोशिश करनी चाहिए।

दीन को दुनिया पर मुक़द्दम करना क्या है क्या दुनिया को बिल्कुल तर्क कर देना है? इस की वज़ाहत फ़रमाते हुए आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "मेरा यह मतलब हरगिज़ नहीं कि मुस्लमान सुस्त हो जाए। इस्लाम किसी को सुस्त नहीं बनाता। अपनी तिजारतों और मुलाज़मतों में भी व्यस्त हूँ परंतु मैं यह नहीं पसंद करता कि ख़ुदा के लिए उनका कोई वक़्त भी ख़ाली न हो। हाँ तिजारत के वक़्त पर तिजारत करें और अल्लाह तआला के ख़ौफ़-ओ-ख़शीयत को उस वक़्त भी मद्द-ए-नज़र रखें ताकि वे तिजारत भी उनकी इबादत का रंग इख़्तेयार कर ले। नमाज़ों के वक़्त पर नमाज़ों को न छोड़ें।

हर मुआमला में कोई हो दीन को मुक़द्दम करें। दुनिया मक़्सूदबिज़्ज़ात न हो। असल उद्देश्य दीन हो। फिर दुनिया के काम भी दीन ही के होंगे।

सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो को देखो कि उन्होंने मुश्किल से मुश्किल वक़्त में भी ख़ुदा को नहीं छोड़ा। लड़ाई और तलवार का वक़्त ऐसा ख़तरनाक होता है कि केवल इस के विचार से ही इन्सान घबरा उठता है। वे वक़्त जबकि जोश और ग़ज़ब का वक़्त होता है ऐसी हालत में भी वे ख़ुदा से ग़ाफ़िल नहीं हुए। नमाज़ों को नहीं छोड़ा। दुआओं से काम लिया। अब यह बदक़िस्मती है कि यूं तो हर तरह से ज़ोर लगाते हैं। बड़ी बड़ी तक़रीरें करते हैं। जलसे करते हैं कि मुस्लमान तरक़्क़ी करें परंतु ख़ुदा से ऐसे ग़ाफ़िल होते हैं कि भूल कर भी उस की तरफ़ तवज्जा नहीं करते।' यह आम मुस्लमानों का हाल है।" फिर ऐसी हालत में क्या उम्मीद हो सकती है कि उनकी कोशिशें नतीजाख़ेज़ हो जबकि वे सबकी सब दुनिया ही के लिए हैं। याद रखो जब तक لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه दिल-ओ-जिगर में प्रवेश न करे और वजूद के ज़र्रे ज़र्रे पर इस्लाम की रोशनी और हुकूमत न हो कभी तरक़्क़ी नहीं होगी।" ये लिखी हुई बात है।"अगर

तुम मग़रिबी क़ौमों का उदाहरण पेश करो कि वे तरक़्क़ीयां कर रहे हैं। इन के लिए और मुआमला है। तुमको किताब दी गई है। तुम पर हुज्जत पूरी हो चुकी है। इन के लिए अलग मामला और मुवाख़ज़ा का दिन है।"उनका मवाख़िज़ा क्या होगा कब होगा वह अल्लाह तआला को जवाबदेह होंगे और होगा यक़ीनन लेकिन हो सकता है मरने के बाद अल्लाह तआला करे, इस दुनिया में न करे। लेकिन हम जो दावा करते हैं ईमान का फिर अगर अमल नहीं करते तो हमारा मुवाख़ज़ा इस दुनिया से भी शुरू हो सकता है। अतः बड़े फ़िक्र की बात है। फ़रमाया "तुम अगर किताबुल्लाह को छोड़ोगे तो तुम्हारे लिए इसी दुनिया में जहन्नुम मौजूद है।

ऐसी हालत में क़रीबन हर शहर में मुस्लमानों की बेहतरी के लिए अंजुमनें और कान्फ्रैंसें होती हैं लेकिन किसी हमदरद इस्लाम के मुँह से यह नहीं निकलता कि क़ुरआन को अपना इमाम बनाओ। इस पर अमल करो।

अगर कहते हैं तो बस यही कि अंग्रेज़ी पढ़ो, कॉलेज बनाओ, बेरिस्टर बनो। इस से मालूम होता है कि ख़ुदा पर ईमान नहीं रहा। बुद्धिमान चिकित्सक भी दस दिन के बाद अगर दवा फ़ायदा न करे तो अपने ईलाज से रुजू कर लेते हैं।' यह ईलाज छोड़ के दूसरा ईलाज शुरू करता है।"यहां नाकामी पर नाकामी होती जाती है और इस से रुजू नहीं करते। अगर ख़ुदा नहीं है तो इस को छोड़कर बे-शक तरक़्क़ी कर लेंगे लेकिन जबकि ख़ुदा है और ज़रूर है फिर उसको छोड़कर कभी भी तरक़्क़ी नहीं कर सकते। उस की बेइज़्ज़ती कर के, उसकी किताब की बे-अदबी कर के चाहते हैं कि कामयाब हों और क़ौम बन जाए, कभी नहीं।"

ग़ैर मुस्लिमों को क़ुरआन-ए-करीम जलाने की क्यों जुर्रत पैदा हुई। इसलिए कि हमने अमलन क़ुरआन-ए-करीम की तालीम पर अमल करना छोड़ दिया और इसी वजह से उनको जुर्रत पैदा हुई जिससे हम भी गुनाह-गार हुए। मुस्लमान गुनाहगार हुए।

फ़रमाया "हमारी राय तो यही है जिसको आँखें देखती हैं। तरक़्क़ी की एक ही राह है कि ख़ुदा को पहचानें और उस पर ज़िंदा ईमान पैदा करें। अगर हम इन बातों को इन दुनिया परस्तों की मजलिस में वर्णन करें तो वह हंसी में उड़ा दें परंतु हम को रहम आता है कि अफ़सोस ये लोग इस को नहीं देख सकते जो हम देखते हैं।" (मल्फ़ूज़ात, भाग 2 पृष्ठ 158-159 ऐडीशन 1984 ई.) फ़रमाया मैं तो ऐसी नज़र से देख रहा हूँ कि मुस्लमानों की तबाही ही तबाही है अगर क़ुरआन-ए-करीम पर अमल नहीं करेंगे।

अतः मुस्लमान कहला कर फिर दो अमली नहीं चल सकती। मुस्लमानों की हालत का नक़्शा हमारे लिए काफ़ी सबक़ है। नाम तो दीन का लेते हैं लेकिन बातें दुनिया की करते हैं जिसका नतीजा यह है कि समस्त मुसलमानो के संदर्भ में हर जगह मुस्लमानों की हालत ख़स्ता है। अतः यह बहुत ग़ौर का मुक़ाम है, बड़े फ़िक्र का मुक़ाम है।

फिर दीन को हर हाल में दुनिया पर मुक़द्दम करने के बारे में मज़ीद एक जगह आप अलैहिस्सलाम ने इस प्रकार फ़रमाया : "देखो दो किस्म के लोग होते हैं एक तो वह लोग जो इस्लाम क़बूल कर के दुनिया के कारोबार और तिजारतों में व्यस्त हो जाते हैं। शैतान उनके सिर पर सवार हो जाता है। मेरा यह मतलब नहीं कि तिजारत करनी मना है।' पहले भी वज़ाहत फ़रमाई "नहीं, सहाबा तिजारतें भी करते थे परंतु वह दीन को दुनिया पर मुक़द्दम रखते थे। उन्होंने इस्लाम क़बूल किया तो इस्लाम के संबंध में सच्चा इलम जो यक़ीन से उनके दलों को लबरेज़ कर दे उन्होंने हासिल किया। यही वजह थी कि वह किसी मैदान में शैतान के हमले से नहीं डगमगाए।" अतः यह हर अहमदी के लिए राहनुमा उसूल है।

"कोई बात उन को सच्चाई के इज़हार से नहीं रोक सका।" रुकावट उत्पन्न नहीं करनी, अपना दीन नहीं छुपाना। फ़रमाया "मेरा मतलब इस से केवल यह है कि जो बिल्कुल दुनिया ही के बंदे और ग़ुलाम हो जाते हैं गोया दुनिया के प्रुस्तार हो जाते हैं ऐसे लोगों पर शैतान अपना ग़लबा और क़ाबू पा लेता है। दूसरे वे लोग होते हैं जो दीन की तरक़्क़ी की फ़िक्र में हो जाते हैं ये वे गिरोह होता है जो हिज़्बुल्लाह कहलाता है और जो शैतान और उस के लश्कर पर फ़तह पाता है।" दुनियावी हिज़्बुल्लाह नहीं, लड़ाईयां करने वाले, जंगें करने वाले। ये अल्लाह तआला से ताल्लुक़ पैदा करने वाला गिरोह है जो हिज़्बुल्लाह कहलाता है। जो शैतान से और उस के लश्कर पर फ़तह पाता है। "माल चूँकि तिजारत से बढ़ता है इस लिए ख़ुदा तआला ने भी तलब दीन और दीन की तरक़्क़ी की ख़ाहिश को एक तिजारत ही क़रार दिया है। इसलिए फ़रमाया है هَلۡ اَدُلُّكُمۡ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنۡجِيۡكُمۡ مِّنۡ عَذَابٍ اَلِيۡمٍ (अल् सफ़ : 11) क्या मैं तुम्हें ऐसी तिजारत पर अवगत करूँ जो तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से निजात दे। वह क्या है? दीन की तिजारत। फ़रमाया "सबसे उम्दा तिजारत दीन की है जो दर्द-नाक अज़ाब से निजात देती है। अतः मैं भी ख़ुदा तआला के इन ही शब्दों मैं तुम्हें यह कहता हूँ कि هَلۡ اَدُلُّكُمۡ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنۡجِيۡكُمۡ مِّنۡ عَذَابٍ اَلِيۡمٍ मैं ज़्यादा उम्मीद उन पर करता हूँ जो दीनी तरक़्क़ी और शौक़ को कम नहीं करते। जो इस शौक़ को कम करते हैं मुझे अंदेशा होता है कि शैतान उन पर क़ाबू न पा ले। इस लिए कभी सुस्त नहीं होना चाहिए। हर बात को जो समझ में न आए पूछना चाहिए ताकि मार्फ़त में ज़ियादत हो। पूछना हराम नहीं। बहैसियत इंकार के भी पूछना चाहिए और अमली तरक़्क़ी के लिए भी।" अगर इंकार करना है किसी बात का तब भी पूछो। सवाल तो करो। जवाब तो हासिल करो और इलमी तरक़्क़ी के लिए भी पूछना चाहिए।

"जो इलमी तरक़्क़ी चाहता है इसको चाहिए कि क़ुरआन शरीफ़ को ग़ौर से पढ़ें। जहां समझ में न आए दरयाफ़त करें। अगर बाअज़ मआरिफ़ समझ न सके तो दूसरों से दरयाफ़त कर के फ़ायदा पहुंचाए। क़ुरआन शरीफ़ एक दीनी समुंद्र है जिसकी तह में बड़े बड़े नायाब और बे-बहा गौहर मौजूद हैं।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 3 पृष्ठ 193 से 194-ऐडीशन 1984 ई.)

अतः दीन का इलम हासिल करने के लिए क़ुरआन-ए-करीम की राहनुमाई को पकड़ना ज़रूरी है और यह क़ुरआन-ए-करीम ही अब सही राहनुमाई करेगा। और यही तरीक़ा है जो दीन को दुनिया पर मुक़द्दम करने की तरफ़ राहनुमाई करेगा। अ त : हमें जायज़ा लेना चाहिए कि कितने हैं जो ग़ौर करके क़ुरआन-ए-करीम को पढ़ते हैं, इस की तिलावत करते हैं और फिर इस पर अमल करने की कोशिश हैं।

आप तवज्जा दिलाते हुए कि क़ुरआन शरीफ़ का हम पर बहुत एहसानात हैं इसलिए उसको बहुत ग़ौर से और तवज्जा से पढ़ना चाहिए। फ़रमाते हैं : "अतः याद रखना चाहिए कि क़ुरआन शरीफ़ ने पहली किताबों और नबियों पर एहसान किया है जो उनकी तालीमों को जो क़िस्सा के रंग में थीं इलमी रंग दे दिया है। मैं सच्च सच्च कहता हूँ कि कोई शख़्स उन क़िस्सों और कहानियों से निजात नहीं पा सकता जब तक वह क़ुरआन शरीफ़ को न पढ़े क्योंकि क़ुरआन शरीफ़ ही की यह शान है कि वह اِنَّهٗ لَقَوۡلٌ فَصۡلٌ ۙ وَّمَا هُوَ بِالۡهَزۡلِ (अल् तारिक : 14-15)"यह फ़ैसला करने वाला क़ौल है कोई फ़ुज़ूल बातें नहीं हैं इस में। "वह मीज़ान, मुहैमिन, नूर और शिफ़ा और रहमत है। जो लोग क़ुरआन शरीफ़ को पढ़ते और उसे क़िस्सा समझते हैं उन्होंने क़ुरआन शरीफ़ नहीं पढ़ा बल्कि उसकी बे-हुरमती की है। हमारे मुख़ालिफ़ क्यों हमारी मुख़ालिफ़त में इस क़दर तेज़ हुए हैं? केवल इसीलिए कि हम क़ुरआन शरीफ़ को जैसा कि ख़ुदा तआला ने फ़रमाया है कि वह सरासर नूर, हिक्मत और मार्फ़त है दिखाना चाहते हैं और वह कोशिश करते हैं कि क़ुरआन शरीफ़ को एक मामूली क़िस्से से बढ़कर महत्व न दें। हम इस को गवारा नहीं कर सकते।

ख़ुदा तआला ने अपने फ़ज़ल से हम पर खोल दिया है कि क़ुरआन शरीफ़ एक ज़िंदा और रोशन किताब है इस लिए हम उनकी मुख़ालेफ़त की क्यों पर्वा करें। उद्देश्य मैं बार-बार इस बात की तरफ़ उन लोगों को जो मेरे साथ ताल्लुक़ रखते हैं नसीहत करता हूँ कि ख़ुदा तआला ने इस सिलसिला को कश्फ़-ए-हक़ायक़ के लिए क़ायम किया है।"

हक़ायक़ के ज़ाहिर करने के लिए बताने के लिए क़ायम किया है "क्योंकि उस के अतिरिक्त अमली ज़िंदगी में कोई रोशनी और नूर पैदा नहीं हो सकता और मैं चाहता हूँ कि अमली सच्चाई के ज़रीया इस्लाम की ख़ूबी दुनिया पर ज़ाहिर हो जैसा कि ख़ुदा ने मुझे इस काम के लिए निर्धारित किया है। इस लिए क़ुरआन शरीफ़ को कसरत से पढ़ो परंतु निरा क़िस्सा समझ कर नहीं बल्कि एक फ़लसफ़ा समझ कर।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 3 पृष्ठ 155 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः क़ुरआन-ए-करीम को समझना बहुत ज़रूरी है। बहुत से सवाल अक्सर अहमदी करते हैं। अगर वह क़ुरआन-ए-करीम को ग़ौर से पढ़ें तो वहीं उनको उनके जवाब भी मिल जाऐंगे। मुख़्तलिफ़ फंक्शनज़ (functions) में जब क़ुरआन के हवाले से बात की जाती है तो सुनने वाले प्रभावित होते हैं, इस्लाम की ख़ूबियों के मोतरिफ़ होते हैं। अतः एतेमाद के साथ हर अहमदी को क़ुरआन-ए-करीम को इस्तिमाल करना चाहिए। जहां यह हमारी तर्बीयत के लिए राहनुमा है वहां ग़ैरों के एतराज़ों के जवाब देने के लिए भी एक ज़बरदस्त हथियार है।

दीन को दुनिया पर मुक़द्दम करने वाले के लिए सबसे अहम बात यह है कि इस का ख़ुदा तआला से भी ताल्लुक़ पैदा हो जाए। अहकामात का पता चल जाए तो फिर इन अहकामात देने वाले से ताल्लुक़ होना चाहिए, ख़ुदा तआला से भी ताल्लुक़ होना चाहिए और यह ताल्लुक़ इबादत से पैदा होता है और इबादत का इस्लाम में बेहतरीन ज़रीया नमाज़ है। अतः हर अहमदी को यह जायज़ा लेना चाहिए कि इस की नमाज़ की क्या हालत है। अगर हमारी यह हालत दरुस्त हो गई और हमारा अल्लाह तआला से इस तरह ताल्लुक़ क़ायम हो गया तो फिर ही वह हालत है जब हमें हक़ीक़ी ख़ुशी मिलेगी।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "मेरा मज़हब तो यह है कि जिसको बला से बचना हो वह गुप्त तौर पर ख़ुदा से सुलह कर ले और अपनी ऐसी तबदीली कर ले कि ख़ुद उसे महसूस हो कि मैं वह नहीं हूँ। ख़ुदा तआला क़ुरआन में फ़रमाता है। إِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِأَنْفُسِهِمْ (अल् राद : 12)"अर्थात निसंदेह अल्लाह तआला किसी क़ौम की हालत नहीं बदलता जब तक वह ख़ुद उसे तबदील न करें जो उनके नफ़सों में है, उनके दिलों में है। फ़रमाया "सच्चे मज़हब की जड़ ख़ुदा पर ईमान है और ख़ुदा पर ईमान चाहता है कि सच्ची परहेज़-गारी हो। ख़ुदा का ख़ौफ़ हो।

तक़्वा वाले को ख़ुदा तआला कभी ज़ाए नहीं करता। वह आसमान से उस की मदद करता है। फ़रिश्ते उस की मदद को उतरते हैं। इस से बढ़कर क्या होगा कि मुत्तक़ी से मोजिज़ा ज़ाहिर हो जाता है। अगर इन्सान ख़ुदा तआला के साथ पूरी सफ़ाई कर ले और उन अफ़आल और आमाल को छोड़ दे जो उसकी ना रजामंदी का मूजिब हैं तो वह समझ ले कि हर एक काम बरकत से तै पा जाएगा। हमारा ईमान तो आसमानी कार्यवाईयों ही पर है।" आसमान से काम होंगे तो होंगे और कोई ज़रीया नहीं। "यह सच्ची बात है कि अगर ख़ुदा तआला किसी का हो जाए तो सारा जहान अपनी मुख़ालेफ़त से कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता। जिसको ख़ुदा महफ़ूज़ रखना चाहे उस को नुकसान पहुंचाने वाला कौन हो सकता है? अतः ख़ुदा पर भरोसा करना ज़रूरी है।" फ़रमाया "अतः ख़ुदा पर भरोसा करना ज़रूरी है और यह भरोसा ऐसा होना चाहिए कि हर एक वस्तु से पूर्णतः पास हो। अस्बाब ज़रूरी हैं परंतु सृष्टि का कारण बनता है भी तो ख़ुदा तआला ही के हाथ में है। वह हर एक माध्यम को पैदा कर सकता है इस लिए अस्बाब पर भी भरोसा न करो और यह भरोसा यूं पैदा होता है कि नमाज़ों की पाबंदी करो और नमाज़ों में दुआओं का इल्तिज़ाम रखो। हर एक किस्म की लग़्ज़िश से बचना चाहिए और एक नई ज़िंदगी की बुनियाद डालनी चाहिए। यह याद रखो! अज़ीज़ भी ऐसे दोस्त नहीं होते जैसे ख़ुदा अज़ीज़ होता है। वह राज़ी हो तो कुल जहान राज़ी हो जाता है।

अगर वह किसी पर रजामंदी ज़ाहिर करे तो उल्टे अस्बाब को सीधा कर देता है। "बिगड़े काम भी बन जाते हैं। "मुज़िर को मुफ़ीद बना देता है। यही तो इस की ख़ुदाई है। हाँ यह बात भी याद रखने के काबिल है कि जिसके लिए दुआ की जाती है इसको ज़रूरी है कि ख़ुद अपनी सलाहियत में मशग़ूल रहे।" दुआ के लिए कहते हैं, दुआ के साथ-साथ अपनी इस्लाह करने में ख़ुद भी व्यस्त होना पड़ेगा। "अगर वह किसी और पहलू से ख़ुदा को नाराज़ कर देता है तो वह दुआ के असर को रोकने वाला ठहरता है।

मस्नून तरीक़ पर अस्बाब से मदद लेना गुनाह नहीं है परंतु मुक़द्दम ख़ुदा को रखे और ऐसे अस्बाब इख़्तेयार न करे जो ख़ुदा तआला की नाराज़ी का माध्यम हो।" (मल्फ़ूज़ात, भाग 2 पृष्ठ 184-185 ऐडीशन 2022 ई.)

नमाज़ में लज़्ज़त न आने की वजह और इस का ईलाज वर्णन फ़रमाते हुए आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : "उद्देश्य में देखता हूँ कि लोग नमाज़ों में ग़ाफ़िल और सुस्त इस लिए होते हैं कि उनको इस लज़्ज़त और अनांद से सूचना नहीं जो अल्लाह तआला ने नमाज़ के अंदर रखा है और बड़ी भारी वजह उसकी यही है फिर शहरों और गांव में तो और भी सुस्ती और ग़फ़लत होती है। अतः पचासवां हिस्सा भी तो पूरी मुस्तइद्दी और सच्ची मुहब्बत से अपने मौला हक़ीक़ी के हुज़ूर सिर नहीं झुकाता। फिर सवाल यही पैदा होता है कि क्यों उनको इस लज़्ज़त की इत्तिला नहीं और न कभी उन्होंने इस मज़ा को चखा। और मज़ाहिब में ऐसे अहकाम नहीं हैं। कभी ऐसा होता है कि हम अपने कामों में मुबतला होते हैं और मुअज़्ज़न अज़ान दे देता है। फिर वह सुनना भी नहीं चाहते गोया उनके दिल हैं" कि अज़ान हो गई और नमाज़ के लिए जाना पड़ेगा। "यह लोग बहुत ही काबिल-ए-रहम हैं। कुछ लोग यहां भी ऐसे हैं कि उनकी दुकानें देखो तो मस्जिदों के नीचे हैं परंतु कभी जा कर खड़े भी तो नहीं होते। अतः में यह कहना चाहता हूँ कि ख़ुदा तआला से निहायत सोज़ और एक जोश के साथ यह दुआ मांगनी चाहिए कि जिस तरह फलों और वस्तुओं की तरह तरह की लज़्ज़तें अता की हैं नमाज़ और इबादत का भी एक-बार मज़ा चखा दे। खाया हुआ याद रहता है। देखो अगर कोई शख़्स किसी ख़ूबसूरत को एक सरवर के साथ देखता है तो वह उसे ख़ूब याद रहता है और फिर अगर किसी बदशकल और न पसंदीदा शकल को देखता है तो इस की सारी हालत के विषय के संबंध में उस के मुजस्सम हो कर सामने आ जाती है। हाँ अगर कोई ताल्लुक़ न हो तो कुछ याद नहीं रहता।

इसी तरह बे नमाज़ों के नज़दीक नमाज़ एक बोझ है कि नाहक़ सुबह उठकर सर्दी में वुज़ू कर के ख़्वाब-ए-राहत छोड़कर कई किस्म की आसाइशों को खो कर पढ़नी पड़ती है।

असल बात यह है कि उसे बेज़ारी है वह इस को समझ नहीं सकता। इस लज़्ज़त और राहत से जो नमाज़ में है उसको इत्तिला नहीं है। फिर नमाज़ में लज़्ज़त क्योंकर हासिल हो। मैं देखता हूँ कि एक शराबी और नशा बाज़ इन्सान को जब आनंद नहीं आता तो वह पै दर पै प्याले पीता जाता है यहां तक कि उसको एक किस्म का नशा आ जाता है। दानिशमंद और बुज़ुर्ग इन्सान इससे फ़ायदा उठा सकता है और वह यह कि नमाज़ पर दवाम करे' बाक़ायदगी से पढ़े "और पढ़ता जाए यहां तक कि उस को आनंद आ जाए और जैसे शराबी के ज़हन में एक लज़्ज़त होती है जिसका हासिल करना उसका उद्देश्य होता है इसी तरह से ज़हन में और सारी ताक़तों का रुजहान नमाज़ में उस आनंद का हासिल करना हो और फिर एक ख़ुलूस और जोश के साथ कम से कम इस नशा बाज़ के इज़्तेराब और पीढ़ा और दर्द की भांति ही एक दुआ पैदा हो कि वह लज़्ज़त हासिल हो तो मैं कहता हूँ और सच्च कहता हूँ कि यक़ीनन यक़ीनन वह लज़्ज़त हासिल हो जावेगी। फिर नमाज़ पढ़ते वक़्त उन मुफ़ाद का हासिल करना भी मलहूज़ हो जो उसे होते हैं और एहसान पेश-ए-नज़र रहे। إِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ (हूद : 115) नेकियां बदियों को ज़ायल कर देती हैं। अतः उन हसनात को और लज़्ज़ात को दिल में रखकर दुआ करे कि वह नमाज़ जो कि सिद्दीक़ों और मोहसिनों की है वह नसीब करे।

यह जो फ़रमाया है إِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ अर्थात नेकियां या नमाज़ बदियों को दूर करती है या दूसरे मुक़ाम पर फ़रमाया है नमाज़ व्यभिचार और बुराईयों से बचाती है और हम देखते हैं कि बाअज़ लोग बावजूद नमाज़ पढ़ने के फिर बुरे काम करते हैं इस का उत्तर यह है कि वह नमाज़ें पढ़ते हैं परंतु न रूह और रास्ती के साथ। वह सिर्फ़ रस्म और आदत के तौर पर टक्करें मारते हैं। उनकी रूह मुर्दा है। अल्लाह तआला ने उनका नाम हसनात नहीं रखा। और यहां जो हसनात का शब्द रखा अल् सलात का शब्द नहीं रखा बावजू इसके कि अर्थ वही हैं इस की वजह यह है किता नमाज़ की ख़ूबी और हुस्न-ओ-जमाल की तरफ़ इशारा करे कि वह नमाज़ बदियों को दूर करती है जो अपने अंदर एक सच्चाई की रूह रखती है और फ़ैज़ की तासीर इस में मौजूद है।

वह नमाज़ यक़ीनन यक़ीनन बुराईयों को दूर करती है। नमाज़ उठने बैठने का नाम नहीं है। नमाज़ का मग़ज़ और रूह वे दुआ है जो एक आनंद और सरूर अपने अंदर रखती है।" (मल्फ़ूज़ात, भाग 1 पृष्ठ 162 से 164 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः हमें अपने जायज़े लेने की ज़रूरत है। क्या हम नमाज़ों में आनंद हासिल करते हैं? क्या हम मुकम्मल भरोसा सिर्फ़ अस्बाब पर तो नहीं रखते? अगर हम नमाज़ों की हिफ़ाज़त करने वाले हैं तो हम बैअत का हक़ अदा करने वाले हैं, अपने उद्देश्य को पूरा करने वाले हैं। अन्यथा क़ाबिल फ़िक्र हालत है।

फिर इलम-ओ-मार्फ़त में तरक़्क़ी और शैतान के हमले से बचने के बारे में तवज्जा दिलाते हुए और यह कि मुर्शिद और मुरीद के ताल्लुक़ात कैसा होने चाहिए फ़रमाते हैं : "मुर्शिद और मुरीद के ताल्लुक़ात उस्ताद और शागिर्द की मिसाल से समझ लेने चाहिए। जैसे शागिर्द उस्ताद से फ़ायदा उठाता है इसी तरह मुरीद अपने मुर्शिद से लेकिन शागिर्द अगर उस्ताद से ताल्लुक़ तो रखे परंतु अपनी तालीम में क़दम आगे न बढ़ाए तो फ़ायदा नहीं उठा सकता। यही हाल मुरीद का है। अतः इस सिलसिला में ताल्लुक़ पैदा करके अपनी मार्फ़त और इलम को बढ़ाना चाहिए। तालिब-ए-हक़ को एक मुक़ाम पर पहुंच कर हरगिज़ ठहरना नहीं चाहिए अन्यथा धिक्कारा हुआ शैतान और तरफ़ लगा देगा और जैसे बंद पानी में बदबू पैदा हो जाती है।' खड़े पानी में सड़न पैदा हो जाती है, कीड़े इस में पैदा हो जाते हैं, कई बिमारियों की वजह बन जाता है। इसी तरह इन्सान की हालत होती है जो एक जगह ठहर गया। अतः हमारे क़दम आगे बढ़ते चले जाने चाहिए। फ़रमाया : "इसी तरह अगर मोमिन अपनी प्रगति के लिए कोशिश न करे तो वह गिर जाता है। अतः कुशकिस्मत का कर्तव्य है कि वह धर्म को सीखने में लगा रहे। हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बढ़कर कोई इन्सान कामिल दुनिया में नहीं गुज़रा लेकिन आप को भी رَبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا की दुआ तालीम हुई थी फिर और कौन है जो अपनी मार्फ़त और इलम पर कामिल भरोसा कर के ठहर जाए और आइन्दा तरक़्क़ी की ज़रूरत न समझे। जूँ-जूँ इन्सान अपने इलम और मार्फ़त में तरक़्क़ी करेगा उसे मालूम होता जावेगा कि अभी बहुत सी बातें हल तलब बाक़ी हैं। कुछ विषयों को वह इबतेदाई निगाह में (इस बच्चे की तरह जो अक़्लीदस के शक्लों को केवल बेहूदा समझता है)"अर्थात ज्योमैटरी की शक्लें हैं या जो मुख़्तलिफ़ डायाग्राम (diagram) साईंसदानों की तरफ़ से बनाए जाते हैं तो बच्चा उनको लकीरें समझता है। वह समझता है इसकी कोई हैसियत नहीं है। तो फ़रमाया कि ऐसे लोग ऐसे ही हैं जो बच्चे की तरह हैं। इन चीज़ों को "बिल्कुल बेहूदा समझते थे।" फ़रमाया" लेकिन आख़िर वही उमूर सदाक़त की सूरत में उनको नज़र

आए। "जब बड़े हुए अक़ल आई तो यह पता लगा इस में तो बड़ी काम की बातें हैं। "इस लिए किस क़दर ज़रूरी है कि अपनी हैसियत को बदलने के साथ ही इलम को बढ़ाने के लिए हर बात की तकमील की जाए। तुमने बहुत ही बेहूदा बातों को छोड़ कर इस सिलसिला को क़बूल किया है।" फ़रमाया बहुत सी बेहूदा बातों को छोड़कर इस सिलसिले को क़बूल किया है"अगर तुम उसके विषय में पूरा इलम और बसीरत हासिल नहीं करोगे तो इस से तुम्हें क्या फ़ायदा हुआ। तुम्हारे यक़ीन और मार्फ़त में क़ुव्वत क्योंकर पैदा होगी। ज़रा ज़रा सी बात पर शकूक और शुबहात पैदा होंगे और आख़िर क़दम के डगमगा जाने का ख़तरा है।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 3 पृष्ठ 193 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः बाअज़ लोग जिनके ईमान डगमगाते हैं इसलिए कि वह इलम में तरक़्क़ी नहीं करते या अपनी मन घड़त तशरीहें और व्याख्या करते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कुतुब का मुताला नहीं करते।

अगर हम दीनी इलम की तरफ़ तवज्जा दें तो ख़ुदा तआला की हस्ती पर ईमान में भी हम तरक़्क़ी करेंगे और इस्लाम और अहमदियत की सच्चाई पर भी ईमान में हम बढ़ने वाले होंगे। अपने बच्चों की ईमान की भी हिफ़ाज़त करने वाले होंगे और इस तरफ़ भी बहुत तवज्जा देने की ज़रूरत है। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अगर मेरी बैअत की है तो मुझे हुक्म और अदल तस्लीम करो। इस बात पर यक़ीन रखो कि जो बात मैं कहूँगा ख़ुदा तआला और रसूले मक़बूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तालीम के मुताबिक़ कहूँगा। अल्लाह तआला की विशेष राहनुमाई से कहूँगा। अतः आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अपने ईमान की यह हालत पैदा करो कि हुक्म और अदल के फ़ैसलों को इज़्ज़त की निगाह से देखो।

फ़रमाया कि "जो शख़्स ईमान लाता है उसे अपने ईमान से यक़ीन और इर्फ़ान तक तरक़्क़ी करनी चाहिए। न यह कि वह फिर ज़न में गिरफ़्तार हो। याद रखो ज़न मुफ़ीद नहीं हो सकता।' बद ज़न्नीयाँ पैदा होती हैं।"ख़ुदा तआला ख़ुद फ़रमाता है। إِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا (यूनुस : 37) "निसंदेह ज़न हक़ से बेनयाज़ नहीं कर सकता। हक़ बहरहाल हक़ है। बद ज़न्नीयाँ पैदा करने से हक़ छुप नहीं सकता। "यक़ीन ही एक ऐसी चीज़ है जो इन्सान को बा-मुराद कर सकती है।" फ़रमाया "यक़ीन के बग़ैर कुछ नहीं होता। अगर इन्सान हर बात पर बदज़नी करने लगे तो शायद एक दम भी दुनिया में न गुज़ार सके।" अगर दुनियावी बातों में तुम बद ज़न्नीयाँ करने लगो। वहीं से मिसाल देख लो। "वह पानी न पी सके कि शायद इस में ज़हर मिला दिया हो। बाज़ार की चीज़ें न खा सके कि उनमें हलाक करने वाली कोई वस्तु हो। फिर किस तरह वह रह सकता है। यह एक मोटी मिसाल है।" जिनको वहम की बीमारी होती है वे तो इस तरह सोच सोच के अपनी ज़िंदगी मुश्किल कर लेते हैं। रुहानी उमूर में भी यही चीज़ देखनी चाहिए कि ऐसी बद ज़न्नीयाँ पैदा न हों। फ़रमाया "इसी तरह पर इन्सान रुहानी उमूर में इस से फ़ायदा उठा सकता है। अब तुम ख़ुद ये सोच लो और अपने दिलों में फ़ैसला कर लो कि क्या तुमने मेरे हाथ पर जो बैअत की है और मुझे मसीह मौऊद हकम अदल माना है तो इस मानने के बाद मेरे किसी फ़ैसला या फ़ेअल पर अगर दिल में कोई कुदूरत या रंज आता है तो अपने ईमान की फ़िक्र करो। वह ईमान जो ख़दशात और तुहमात से भरा हुआ है कोई नेक नतीजा पैदा करने वाला नहीं होगा लेकिन अगर तुमने सच्चे दिल से तस्लीम कर लिया है कि मसीह मौऊद वाक़ई हकम है तो फिर उस के हकम और फ़ेअल के सामने अपने हथियार डाल दो और इस के फ़ैसलों को इज़्ज़त की निगाह से देखो ता तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पाक बातों की इज़्ज़त और अज़मत करने वाले ठहरो। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शहादत काफ़ी है वह तसल्ली देते हैं कि वह तुम्हारा इमाम होगा। वह हक्म अदल होगा। अगर इस पर तसल्ली नहीं हुई तो फिर कब होगी। यह तरीक़ हरगिज़ अच्छा और मुबारक नहीं हो सकता कि ईमान भी हो और दिल के बाअज़ गोशों में बद ज़न्नीयाँ भी हों। मैं अगर सादिक़ नहीं हूँ तो फिर जाओ और सादिक़ तलाश करो और यक़ीनन समझो कि इस वक़्त और सादिक़ नहीं मिल सकता और फिर अगर दूसरा कोई सादिक़ न मिले और नहीं मिलेगा तो फिर मैं इतना हक़ मांगता हूँ जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझ को दिया है।

जिन लोगों ने मेरा इंकार किया है और जो मुझ पर एतराज़ करते हैं उन्होंने मुझे शनाख़्त नहीं किया और जिस ने मुझे तस्लीम किया और फिर एतराज़ रखता है वह और भी बदक़िस्मत है कि देखकर अंधा हुआ। असल बात यह है कि मुआसिरत भी रुत्बा को घटा देती है।

इस लिए हज़रत अलैहिस्सलाम कहते हैं कि नबी बेइज़्ज़त नहीं होता परंतु अपने वतन में। इस से मालूम हो सकता है कि उनको अपने वतन वालों से क्या - क्या तकलीफ़ें और सदमे उठाने पड़े थे। आठ यह अंबिया अलैहिस्सलाम के साथ एक सुन्नत चली आती है हम इस से अलग क्योंकर हो सकते हैं।"

नबियों की मुख़ालिफ़त होती है। अगर हमारे से हो रही है तो यह तो कोई ऐसी बात नहीं। "इस लिए हमको जो कुछ अपने मुख़ालिफ़ों से सुनना पड़ा यह उसी सुन्नत के मुवाफ़िक़ है مَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ (अल-हुजर : 12) "कि कोई रसूल उनके पास नहीं आता परंतु वह उस से उपहास करते हैं।"अफ़सोस अगर ये लोग साफ़ नीयत से मेरे पास आते तो मैं उनको वह दिखाता जो ख़ुदा ने मुझे दिया है और वह ख़ुदा ख़ुद उन पर अपना फ़ज़ल करता और उन्हें समझा देता परंतु उन्होंने बुख़ल और हसद से काम लिया अब मैं उनको किस तरह समझाऊँ।"

अब भी एक सौ तीस बत्तीस साल होने लगे ये लोग निशानात देख के भी सबक़ हासिल नहीं करते। फ़रमाया "जब इन्सान सच्चे दिल से हक़ तलबी के लिए आता है तो सब फ़ैसले हो जाते हैं लेकिन जब बद-गोई और शरारत उद्देश्य हो तो कुछ भी नहीं हो सकता।" फ़रमाते हैं कि " .. हिजजुल् किरामा में इब्ने अरबी के हवाला से लिखा है कि मसीह मौऊद जब आएगा तो उसे मुफ़्तरी और जाहिल ठहराया जाएगा और यहां तक भी कहा जाएगा कि वे दीन को तग़य्युर करता है। उस वक़्त ऐसा ही हो रहा है। इस किस्म के इल्ज़ाम मुझे दीए जाते हैं इन शुबहात से इन्सान तब निजात पा सकता है जब वह अपने इजतिहाद की किताब ढाँप ले और इस के बजाय वह यह फ़िक्र करे कि क्या यह सच्चा है या नहीं। बाअज़ उमूर बेशक समझ से परे होते हैं लेकिन जो लोग पैग़म्बरों पर ईमान लाते हैं वे हुस्न-ए-ज़न और सब्र और इस्तक़लाल से एक वक़्त का इंतेज़ार करते हैं तो अल्लाह तआला उन पर असल हक़ीक़त को खोल देता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वक़्त सहाबा सवाल नहीं करते थे बल्कि मुंतज़िर रहते थे कि कोई आकर सवाल करे तो फ़ायदा उठाते थे अन्यथा ख़ुद ख़ामोश सिर झुका कर हर बात स्वीकार किए हुए बैठे रहते और जुर्रत सवाल की न करते थे। मेरे नज़दीक असल और असलम तरीक़ यही है कि अदब करे। जो व्यक्ति नबी के आदाब को नहीं समझता और उस को इख़तेयार नहीं करता अंदेशा होता है कि वह हलाक न किया जाए।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 3 पृष्ठ 73 से 75 ऐडीशन 1984 ई.)

यह आप अलैहिस्सलाम अपने ज़माने की बातें कर रहे हैं जब लोग आप अलैहि-स्सलाम की मजलिस में बैठते थे। आज आप किताबों को देख के भी, पढ़के भी और दलायल सुनके भी इस किस्म की बातें ही लोग करते हैं। फ़रमाया ये शख़्स आदाबु-न्नबी को नहीं समझते और यही अंदेशा है कि वे हलाक न हो जाएं।

अतः मुस्लमान तो अपनी बदक़िस्मती की वजह से यह संदेश सुनने और समझने में बड़ी बहाना बाज़ी करते हैं और उनकी हालत-ए-ज़ार भी उनको इस तरफ़ मुतव-ज्जा नहीं करती कि देखें कि क्या वजह है हमारी यह जो हालत हुई हुई है और भी बहुत कुछ हम क्या बन रहे हैं। ज़माना भी है और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी भी पूरी हो रही हैं तो कम से कम आने वाले मौऊद को तलाश तो करें। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अगर मैं नहीं तो कोई और लेकिन तुम्हें और कोई नहीं मिलेगा।लेकिन दुनिया में पड़ कर सब भूल रहे हैं लेकिन हमारा काम फिर भी यह है कि उनको बचाने की कोशिश करें और मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का संदेश हर एक तक पहुंचाएं और सिर्फ मुस्लमानों में ही नहीं बल्कि हर फ़र्द तक चाहे वह किसी भी मज़हब से ताल्लुक़ रखता है या अधार्मिक है यह पहुंचाएं।

अभी तो बहुत काम हमारा करने वाला है। जर्मनी में जमाअत को सौ साल पूरे होने पर भी हम जर्मनों तक इस्लाम का पैग़ाम नहीं पहुंचा सके। अतः इस लिहाज़ से भी जायज़े लेने की ज़रूरत है।

इस्लाम का पैग़ाम पहुंचाने और तब्लीग़ की तरफ़ तवज्जा दिलाते हुए आप अलै-हिस्सलाम फ़रमाते हैं : "उस वक़्त हमारे दो बड़े ज़रूरी काम हैं। एक यह कि अरब में इशाअत हो दूसरे यूरोप पर समझने के अंतिम प्रयास पूर्ण करें। अरब पर इस लिए कि अंदरूनी तौर पर वह हक़ रखते हैं। एक बहुत बड़ा हिस्सा ऐसा होगा कि उनको मालूम भी न होगा कि ख़ुदा ने कोई सिलसिला क़ायम किया है।"

आज भी हक़ीक़त है हर अरब तक हमारा पैग़ाम नहीं पहुंचा बावजूद इसके कि पहले ज़माने के लिहाज़ से कोशिशें बहुत बढ़ चुकी हैं। अगर पहुंचा है तो मुख़ालेफ़ीन के ज़रीया से जिन्हों ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के नाम का इस्तहज़ा करके क़ादियानी के नाम से हमें पुकार कर हमें दुनिया में या अपने लोगों में परिचित किराया है और हर झूठ और मनघड़त कहानी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में लोगों को बताई है। एक तरफ़ का पैग़ाम उनको पहुंचा है। अगर परिचय है तो मुख़ालेफ़ीन के द्वारा से लेकिन हमारे द्वारा से परिचय अच्छी तरह अभी नहीं हुआ।

बहरहाल फ़रमाया : "और यह हमारा फ़र्ज़ है कि उनको पहुंचाएं अगर न पहुंचाएं तो उद्देडता होगी। ऐसा ही यूरोप वाले हक़ रखते हैं कि उनकी गलतियां ज़ाहिर की जाए कि वह एक बंदा को ख़ुदा बनाकर ख़ुदा से दूर जापड़े हैं। यूरोप का तो यह हाल हो गया है कि वाक़ई اَخۡلَدَ اِلَی الۡاَرۡضِ का मिस्दाक़ हो गया है।" अर्थात वह ज़मीन की तरफ़ झुक गए हैं। सिवाए दुनिया-दारी के आम तौर पर लोगों में किसी चीज़ की परवाह नहीं है। हमारे कुछ लोग और नौजवान उनकी इस तरक़्क़ी से प्रभवित हो जाते हैं। बजाय उसके कि उन्हें बताएं कि तुम जिस तरफ़ जा रहे हो यह सिर्फ़ तबाही है और कुछ नहीं है। प्रभवित होने की ज़रूरत नहीं। हमें तब्लीग़ करनी चाहिए। फ़रमाया "तरह तरह की ईजादें सनअतें होती रहती हैं।" मग़रिबी देशों में तरक़्क़ी याफताह मुल्कों में।" इस से ताज्जुब मत करो कि यूरोप पृथ्वी के ज्ञान में तरक़्क़ी कर रहा है।" इम्प्रेस (Impress) न हो जाओ कि यह तरक़्क़ी हो रही है।" ये क़ायदा की बात है कि जब आसमानी उलूम के दरवाज़े बंद होजाते हैं तो फिर ज़मीन ही की बातें सूझा करती हैं। यह कभी साबित नहीं हुआ कि नबी भी यंत्र बनाया करते थे।" पुर्ज़े बनाया करते थे"या उनकी सारी कोशिशें और हिम्मतें अर्ज़ी ईजादात की इंतेहा होती थीं।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 2 पृष्ठ 253-254 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः यह बात है जो हम में से हर एक के ज़हन में गड़ जानी चाहिए कि हमने दुनिया कमाने के लिए अहमदियत क़बूल नहीं की बल्कि ख़ुदा तआला से ज़िंदा ताल्लुक़ पैदा करने के लिए अहमदियत क़बूल की है और यह पैग़ाम हमने दुनिया वालों को पहुंचाना भी है। यही चीज़ है जो हमारी दुनिया-ओ-आख़िरत संवारने वाली होगी।

आप अलैहिस्सलाम ने आने की ग़रज़ और उद्देश्य वर्णन करते हुए हैं : "मेरे आने का वास्तविक उद्देश्य और उद्देश्य यही है कि तौहीद, अख़लाक़ और रूहानियत को फैलाओ। तौहीद से मुराद यह है कि ख़ुदा तआला ही को अपना मतलूब, उद्देश्य और महबूब और आज्ञाकारी और विश्वासी कर लिया जाए। मोटी मोटी बुतपरस्ती और शिर्क से लेकर अस्बाब परस्ती के शिर्क और बारीक शिर्क अपने नफ़्स को भी कुछ समझ लेने तक दूर कर दिया जाए।" हर बात में अपने नफ़्स का भी शिर्क शामिल न हो। किसी बारीक से बारीक चीज़ का भी शिर्क शामिल न हो, यह तौहीद है। "जिसमें दुनिया गिरफ़्तार है' आजकल इस से बचना है"और अख़लाक़ से मुराद यह है कि जिस क़दर अंग इन्सान लेकर आया है उनको अपने महल और अवसर पर ख़र्च किया जाए। यह नहीं कि बाअज़ को बिल्कुल बेकार छोड़ दिया जाए और बाअज़ पर बहुत ज़ोर दिया जाए। उदाहरणतः अगर कोई हाथ को बिल्कुल काट दे तो क्या इस से कोई ख़ूबी पैदा हो सकती है? कदापि नहीं बल्कि सच्चे और कामिल अख़लाक़ यही हैं कि जो जो क़ुव्वतें अल्लाह तआला ने दे रखी हैं उनको अपने महल पर ऐसे तौर से ख़र्च किया जाए कि जिसमें इफ़रात और तफ़रीत पैदा न हो। इफ़रात यह है कि मसलन जिसको क़ुव्वत-ए-शामा में इफ़रात हो तो हिद्दतुल हिस का रोग हो जावेगा" अर्थात इस इन्सान की सूँघने की हिस अगर तेज़ हो जाए तो इन्सान के लिए एक मुश्किल खड़ी हो जाती है। कुछ लोगों की ख़ुशबू की हिस तेज़ हो जाती है उसकी वजह से उनको तकलीफ़ शुरू हो जाती है सिर दर्द शुरू हो जाता है। इसी तरह बाअज़ और दूसरी ख़ुशबूएं हैं उनकी वजह से बीमारियां पैदा हो जाती हैं तो यही दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला एतेदाल में रखे और हर मर्ज़ से बचाए रुहानी मर्ज़ से भी।

फ़रमाया तफ़रीत यह है। अफ़रात तो हिद्दतुल हिस का मर्ज़ हो जावेगा " और फिर इस से और रोग शदीदा पैदा हो जाते हैं।" बीमारियां बढ़ती हैं।"तफ़रीत यह है कि उसकी हिस बिल्कुल नष्ट हो जाती है और एतेदाल यह है कि दोनों अपने अपने महल और मुक़ाम पर रहें और यही वह दर्जा और मुक़ाम है जहां अख़लाक़ अख़लाक़ कहलाते हैं और इसी को मैं क़ायम करने आया हूँ।"

दरमियाना रस्ता इख़्तेयार करना चाहिए और आला अख़लाक़ जिनका इस्लाम में हुक्म है उनको करने की कोशिश करनी चाहिए

फ़रमाया "रूहानियत से मुराद वे आसार और अलामात हैं जो ख़ुदा तआला के साथ सच्चा ताल्लुक़ पैदा होने पर मुतरत्तिब होते हैं और ये कैफ़ियतें हैं जब तक पैदा न हो इन्सान समझ नहीं सकता परंतु वास्तविक उद्देश्य यही है।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 2 पृष्ठ 297 ऐडीशन 2022 ई.)

अतः यह वे बातें हैं जो हमें एक ऐसा इन्सान बनाती हैं जो हक़ीक़ी मोमिन है। अतः ये जायज़े लेने की ज़रूरत है कि क्या हम इस मयार पर हैं कि हमारा मक़सूद-ओ--मतलूब और सबसे ज़्यादा महबूब-ए-ख़ुदा तआला की ज़ात हो। अगर यह नहीं तो हम अभी अपने ईमान के कमज़ोर दर्जे पर हैं।

अतः जायज़े लेने की ज़रूरत है कि ख़ुदा तआला के मुक़ाबले पर हमारी हर दुनियावी ख़ाहिश बे-हक़ीक़त है कि नहीं, उसकी ज़रूरत है। अगर यह होगा तो तभी हम मस्जिदों के भी हक़ अदा करने वाले होंगे। इसी तरह जब हम मस्जिदें बना रहे हैं तो उनको आबाद करने की भी एक फ़िक्र होनी चाहिए।

अतः हर अहमदी को इस पर ग़ौर करने की ज़रूरत है कि तौहीद का किस हद तक उसके दिल में ज़ोर है, शौक़ है, भावना है। इसी तरह आला अख़लाक़ का इज़हार है तो हर अहमदी से होना चाहिए। यह आला अख़लाक़ हैं जो हमारा पैग़ाम पहुंचाने में बड़ा अहम किरदार अदा कर सकते हैं और हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का हक़ अदा कर सकते हैं। मुख़्तलिफ़ मसाजिद के उद्घाटन में जब मैं जाऊं तो जो अहमदियों के जानकार लोग हैं वे इस बात का ज़िक्र करते हैं कि अहमदियों के अख़लाक़ अच्छे हैं लेकिन एक कमी मैंने देखी है। ये अच्छे अख़लाक़ दिखा कर फिर इस्लाम और अहमदियत का परिचय सही तौर पर नहीं कराया जाता। अगर यह परिचय करवाया जाए तो फिर ही हम जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया अहमदियत और इस्लाम का सही पैग़ाम यूरोप के लोगों तक, इस देशों के लोगों तक पहुंचा सकते हैं।

इसी तरह आला अख़लाक़ का इज़हार आपस के ताल्लुक़ात में भी होना चाहिए। सिर्फ यह नहीं कि ग़ैरों के लिए। उनको तो आला अख़लाक़ दिखा दिए और घर में और अपने मुआशरे में एक फ़साद बरपा हो। अतः ये बातें हैं जिनको हमें अख़लाक़ के हवाले से अपने सामने रखनी चाहिए। यही आला अख़लाक़ हैं जिनके पैदा करने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में आए थे और फिर फ़रमाया कि रूहानियत के मयार का नतीजा तब मुतरत्तिब होता है, तब ज़ाहिर होता है, तब उस का पता चलेगा कि रूहानियत पैदा हुई है जब हुक़ूक़ अल्लाह और हुक़ूक़ु ईबाद की अदायगी के आला मयार क़ायम होंगे। अपनों और ग़ैरों को एक हुस्न हमारे अंदर नज़र आ रहा होगा। हमारे बच्चे हमारे से सबक़ लेने वाले होंगे तभी हम कह सकेंगे कि हम ये मयार हासिल करने वाले हैं।

अमीर साहिब जर्मनी पिछले दिनों मुझसे पूछ रहे थे कि हमारा अगली सदी का टार्गेट क्या है। पहली बात तो यह कि जिन चंद बातों का मैंने वर्णन किया है, ये सारी बातें नहीं हैं चंद बातें हैं जिनकी तरफ़ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें तवज्जा दिलाई है

क्या यह हमने इस गुज़री हुई सदी में हासिल कर लिया है? क्या हमारा ख़ुदा तआला से पुख़्ता ताल्लुक़ पैदा हो गया है? क्या हमारी नमाज़ों के आला मयार क़ायम हो गए हैं? क्या हम नमाज़ के औक़ात में दुनियावी कामों को छोड़कर नमाज़ के लिए हाज़िर हो जाते हैं या सिर्फ मस्जिदें बनाने पर ही ज़ोर है? क्या हम क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत में बाक़ायदा हैं? क्या हम क़ुरआन आदेशों को तलाश करके उन पर अमल करने की कोशिश करते हैं? क्या हम अपने बच्चों को दीन से जोड़ने के लिए भरपूर कोशिश कर रहे हैं? क्या हमें सिर्फ अपने बच्चों की दुनियावी तालीम की फ़िक्र है या उनके दीन की भी फ़िक्र है। क्या हमारे आला अख़लाक़ आपस के ताल्लुक़ात में वह मयार हासिल कर चुके हैं जो رُحَمَآءُ بَیۡنَہُمۡ (अल् फ़तह : 30) का नज़ारा हमें अब दिखाएंगे? क्या आला अख़लाक़ के नमूने ग़ैरों पर ज़ाहिर करके उन्हें इस्लाम की ख़ूबसूरत तालीम से हम आगाह कर रहे हैं या सिर्फ कहीं आला अख़लाक़ दिखा कर हम ये बता रहे हैं कि हम पुर मन लोग हैं।

बहुत सी जगहों पर जब मुझे ग़ैरों से कुछ कहने का अवसर मिला तो अक्सर लोगों ने यही कहा है कि हमें इस्लाम की इस ख़ूबसूरत तालीम का पहली दफ़ा इलम हुआ है। इस से साफ़ ज़ाहिर है कि आप अपने ताल्लुक़ात और अख़लाक़ इस्लाम का पैग़ाम पहुंचाने के लिए प्रयोग नहीं कर रहे जिस तरह करने चाहिए। लाखों की तादाद में पमफ़लेट तक़सीम करने का क्या फ़ायदा है जब इस से इस्लाम की तालीम का तआरुफ़ ही लोगों में न हो।

अतः पहले यह जायज़ा लें कि हुक़ूक़ुल्लाह और हुक़ूक़ुल-ईबाद के मयारों को किस हद तक हमने हासिल कर लिया है। अगर हासिल कर लिया है जो मेरे नज़दीक अभी हासिल नहीं हुआ और ख़ुद अपने जायज़े से हर एक को पता लग जाएगा, मेरे कहने की ज़रूरत नहीं। तो फिर अगली सदी का नया टार्गेट क्या है।

अगली सदी का टार्गेट यही मुख़्तसर लाहे-अमल है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहि-स्सलाम के इर्शादात की रोशनी में मैंने बयान किया है। हम यह दावा लेकर उठे हैं कि हमने दुनिया के दिल जीतने हैं। इस दुनिया को ख़ुदा तआला की वहदानियत का क़ायल करना है। दुनिया को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़दमों में ला कर डालना है। अतः इस हवाले से हम में से हर एक को अपने जायज़े लेने चाहिए और एक नए अज़्म के साथ जर्मनी की जमाअत अहमदिया को नई सदी में दाख़िल होना चाहिए कि हम दीन को दुनिया पर मुक़द्दम रखते हुए अपने इस उद्देश्य को हासिल करने की भरपूर कोशिश करेंगे और अपनी औलादों और नसलों को भी ये नसीहत करते रहेंगे और उनकी इस तरह तर्बीयत करेंगे कि अल्लाह तआला से ताल्लुक़ की यह जाग एक नसल से दूसरी नसल में लगती चली जाए। अल्लाह तआला हमें इस की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

ने ऐन वही शब्द प्रयोग कर दिया है जो क़ुरआन-ए-करीम ने किया है, यह कि उनको ऐसा करने की ज़रूरत थी, रूमी इतिहासकार टेहीटस (Tacitus) की गवाही से साबित होजाता है। वह कहता है कि नीरू ने लोगों को ख़ुश करने के लिए मसीहियों को ज़िंदा जलाने, कुत्तों से फड़वाने और सलीब देने के मुख़्तलिफ़ तरीक़ इख़्तेयार कर रखे थे और इस उद्देश्य से उसने अपना शाहीबाग दिया हुआ था। जिस क़ौम पर इस क़दर आम ज़ुलम होगा ज़ाहिर है कि वह इधर--उधर बच कर पनाह लेगी।

जब मसीहियों ने इन जगहों पर पनाह लेनी शुरू की तो पनाह के दिनों में उन्होंने ज़्यादा हिफ़ाज़त की ख़ातिर उनके अंदर कमरे बनाने शुरू कर दिए। इसी तरह जो लोग शहीद होते थे उनकी लाशों को बेहुरमती से बचाने के लिए भी वह इन तेख़ानों में लाकर दफ़न करते थे और चूँकि यह सिलसिला तीन सौ साल तक चला गया इस लिए ये तहखाने इस कसरत से हो गए कि कुछ लोगों के अंदाज़े के मुताबिक़ वह पंद्रह मील की लंबाई तक चले गए हैं।

चूँकि ज़ुलम एक जैसा नहीं चलता। दरमयान में बाअज़ बादशाह नरमी करने लग जाते थे और मसीही फिर वापस शहर में आ जाते थे। फिर जब सख़्ती का दौर आता तो भाग कर उन जगहों में छिप जाते और मालूम होता है कि कई दफ़ा उन्हें वहां महीनों या सालों रहना पड़ता था क्योंकि उनके अंदर स्कूलों और गिरजो के कमरे भी पाए हैं।

यह तेखाने तीन मंज़िल में बने हुए हैं और 1924 में इंग्लिस्तान जाते हुए रुम में मैं ने ख़ुद उनको अपनी आँख से देखा है। पहली मंज़िल के कमरों को तो इन्सान बग़ैर ज़्यादा तकलीफ़ के देख सकता है। दूसरी मंज़िल में बहुत दम घुटता है और तीसरी मंज़िल अर्थात सबसे नीचे के तेख़ाना में जाना तो नमी और अँधेरों की वजह से क़रीबन असंभव होता है। मैं ने देखा है कि इन तेखानो को मसीहियों ने अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ इस तरह बना लिया था जैसे भूल-भुलय्याँ होती है और हिफ़ाज़त के मुंदरजा ज़ैल तरीक़ उनमें प्रयोग किए गए हैं।

(1) वे लोग दरवाज़ों पर कुत्ते रखते थे ताकि अजनबी आदमी के आते ही उनको उसके भोकने से इलम हो जाए। (2) ज़मीन के नीचे कमरे जिन में वे रहते थे जहां से उन्हें ज़मीन की सतह पर से दाख़िल होने का रास्ता था वहां मिट्टी की सीढ़ी न होती थी बल्कि लकड़ी की सीढ़ी रखते थे ताकि अपना आदमी उतरने के बाद वहां से सीढ़ी हटा दी जा सके और ताकि दुश्मन आएं तो फ़ौरन कमरों में न पहुंच सकें (3) लेकिन अगर वह कूदकर या सीढ़ियाँ अपने साथ लाकर उतर ही आएं तो उसके आगे हिफ़ाज़त का यह ईलाज किया गया था कि हर कमरा से चार रास्ते बना दिए गए थे उनमें से एक रास्ता तो अगले कमरा की तरफ़ जाता था और बाक़ी रास्ते कुछ दूर जा कर बंद हो जाते थे। इसका यह फ़ायदा था कि ईसाई तो वाक़िफ़ होने की वजह से झट अगले कमरा की तरफ़ दौड़ जाते थे और पीछा करने वाले ग़लत रास्ता की तरफ़ चले जाते और आगे रास्ता बंद देखकर फिर दूसरे रास्ता की तरफ़ लोटते। इस तरह बार-बार ग़लत रास्तों की तरफ़ जाने की वजह से भागने वाले ईसाइयों से बहुत पीछे रह जाते। अव्वल तो यह पीछा करना ही पुलिस को परेशान कर देता था लेकिन अगर आख़िरी हद तक पीछा कर भी लेते तो (4) मसीही दूसरी मंज़िल अर्थात निचले तेखानों में चले जाते जो पहलों से ज़्यादा तंग ज़्यादा तारीक और ज़्यादा पेचीदा हैं। अगर बिलफ़र्ज़ यहां तक भी कामयाब पीछा किया जाता तो (5)उनसे नीचे तीसरे तहखाने मौजूद थे जिन में हम लोग तो दो-चार मिनट भी नहीं ठहर सके जबकि उसकी एक वजह यह भी थी कि अब वह गिर कर बहुत ज़्यादा नमनाक हो गए हैं परंतु बहर हाल वह भयानक जगहें हैं जहां ग़ालिबन सिर्फ़ पीछा करने के वक़्त में थोड़ी देर के लिए मसीही पनाह लेते थे चूँकि सारे रास्तों की लंबाई कई सौ मील तक जाती है ज़ाहिर है कि इन जगहों में ईसाइयों का पकड़ना आसान काम नहीं होता था परंतु गर्वनमैंट आख़िर गर्वनमैंट होती है कई दफ़ा पुलिस पकड़ भी लेती थी और वहीं इन लोगों को क़तल कर देती थी। मैं ने ऐसे शुहदा की बहुत सी क़ब्रें वहां देखी हैं। हमने कुछ कतबे पादरी से पढ़वा कर मालूम किया कि उनमें वे दर्दनाक वाक़ियात वर्णन किए गए हैं जो शहादत के वक़्त उनको पेश हुए थे।

क़रीब ज़माना में जो नई क़ब्रें और कतबे दरयाफ़त हुए हैं उनमें उन लोगों की क़ब्रें भी मिली हैं जिनके पास पितरस ठहरते थे या जिनका बाइबल में वर्णन है। (लफ़्ज़ कीटाकोमबज़)

डसीस के वक़्त में चूँकि क़ानून बनादिया गया था कि मसीही बुतों को सजदा करने पर मजबूर किए जाएं और बहुत सख़्ती से मसीहियों को मारा जाता था ये ज़माना क़रीबन सारा का सार ईसायो ने कैटा कोम्बज़ में गुज़ारा। सिवाए उनके जिन्होंने डर कर मज़ाहिब को वास्तव में ख़ैराबाद कह दिया इस लिए इस ज़माना में अस्हाबे कह्फ़ ने एक निहायत शानदार मिसाल क़ुर्बानी की पेश की थी।

इन कतबों से जो कैटा-कोम्बज़ में लगे हुए हैं मालूम होता है कि इस वक़्त मसीहियों में शिर्क नहीं था। इन कतबों में कोई लफ़्ज़ शिर्क का नहीं। मसीह को ख़ुदा का बेटा नहीं बल्कि महज़ एक गडरीए की शक्ल में दिखाया जाता है। उनकी माता के लिए कोई ग़ैरमामूली इज़्ज़त का निशान नहीं मिलता। ज़्यादा-तर यूनुस नबी के वाक़िया को और नूह के तूफ़ान के आख़िर में जो कबूतर इस बात की ख़बर लाया था कि पानी हट कर ज़मीन नंगी हो गई है इस वाक़िया को तस्वीरों में दिखाया जाता है जिससे मालूम होता है कि अह्द-नामा क़दीम को उन लोगों ने नहीं छोड़ा था और मसीह को केवल एक नबी और रुहानी गडरिया ख़्याल करते थे। (कैटा-कोम्बज़ के वाक़ियात के लिए देखो इन्साईक्लो पीडीया बिरटेनिका, दी- कैटा कोम्बज़ ऐट रुम, लेखक बेंजमिन इसकाट और डाक्टर मेट लैंड की पुस्तक इत्यादि)

ख़ुलासा यह कि अस्हाबे कह्फ़ के वाक़िया में मसीहियों के इबतेदाई ज़माना के हालात को पेश किया गया है और बताया है कि मसीही क़ौम की इबतेदा तो इस तरह हुई थी कि वे बुतपरस्ती के ख़िलाफ़ जिहाद करते थे और शिर्क से बचने के लिए उन्होंने सदियों तक बड़ी-बड़ी क़ुर्बानियां कीं लेकिन इंतेहा इस तरह हुई है कि असली दीन का कोई निशान भी अब मसीहियों में नहीं पाया जाता।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4 पृष्ठ 424 प्रकाशन 2010 कादियान)

★ ★ ★

पृष्ठ 12 का शेष

सुनना तुम्हारे इख़्तेयार में है। यह सच्ची बात है कि हज़रत-ए-ईसा अलैहिस्सलाम वफ़ात पा चुके हैं और मैं ख़ुदा तआला की क़सम खा कर कहता हूँ कि जो मौऊद आने वाला था वह मैं ही हूँ। और यह भी पक्की बात है कि इस्लाम की ज़िंदगी ईसा के मरने में है।" (लैक्चर लुधियाना रूहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 290)

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "मैं ने बड़े बड़े पादरियों से पूछा है, उन्होंने कहा है कि अगर यह साबित हो जाए कि मसीह मर गया है तो हमारा मज़हब ज़िंदा नहीं रह सकता।" (इसी से पृष्ठ : 264)

जो शख़्स ख़ुदा हो कर तीन दिन तक मरा रहा उस की क़ुदरत का नाम लेना ही शर्म के योग्य बात है

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ज़बरदस्त अकली-ओ-नक़ली दलायल से साबित फ़रमाया कि एक इन्सान कभी ख़ुदा नहीं हो सकता। देखिए अंग्रेज़ों के ख़ुदा की नाताक़ती और बेचारगी का किन ज़बरदस्त शब्दों में आप अलैहिस्सलाम ने वर्णन फ़रमाया। अतः क्या अंग्रेज़ ऐसे शख़्स को अपने मुफ़ाद में खड़ा कर सकते हैं। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"हज़रात पादरी साहिबान भी अपने ख़ुदा को क़ादिर नहीं समझते क्योंकि उनका ख़ुदा अपने मुख़ालिफ़ों के हाथ से मारें खाता रहा, ज़िंदान में दाख़िल किया गया, कोड़े लगे, सलीब पर खींचा गया। अगर वह क़ादिर होता तो इतनी ज़िल्लतें के बावजूद ख़ुदा होने के हरगिज़ न उठाता। और तथा यदि वह क़ादिर होता तो उस के लिए क्या ज़रूरत थी कि अपने बंदों को निजात देने के लिए यह तजवीज़ सोचता कि आप मर जाए और इस तरीक़ से बंदे रिहाई पाएं। जो शख़्स ख़ुदा हो कर तीन दिन तक मरा रहा उस की क़ुदरत का नाम लेना ही शर्म के योग्य बात है। और यह अजीब बात है कि ख़ुदा तो तीन दिन तक मरा रहा लेकिन उस के बंदे तीन दिन तक बग़ैर ख़ुदा के ही जीते रहे।" (चशमा मसीही रूहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 371)

तौरेत और इंजील में तस्लीस की तालीम का नाम-ओ-निशान तक नहीं

आप अलैहिस्सलाम ने उनके तस्लीस के अक़ीदा को भी ज़बरदस्त दलायल अक़ल-ओ-नक़ल के साथ खण्डन फ़रमाया। अतः सोचना चाहिए कि क्या अंग्रेज़ ऐसे शख़्स को अपने मुफ़ाद के लिए खड़ा कर सकते हैं जो हर-दम और हर-आन उनके धर्म को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए तैयार बैठा हो। देखिए किस ज़बरदस्त दलायल के साथ आप अलैहिस्सलाम ने तस्लीस का खंडन फ़रमाया । यह समुंद्र के मुक़ाबिल पर सिर्फ एक कतरा है।

"तस्लीस के अक़ीदा का न सिर्फ क़ुरआन शरीफ़ खंडन करता है बल्कि तौरेत भी खंडन करती है। क्योंकि यह तौरेत जो मूसा को दी गई थी इस में इस तस्लीस का कुछ भी वर्णन नहीं, इशारा तक नहीं, अन्यथा ज़ाहिर है कि अगर तौरेत में भी इन ख़ुदाओं की निसबत तालीम होती तो हरगिज़ मुम्किन नहीं था कि यहूदी इस तालीम को फ़रामोश कर देते .. मैं ने इस बारे मैं ख़ुद कोशिश करके कुछ यहूदियों से हलफ़न दरयाफ़त किया था कि तौरेत में ख़ुदा तआला के बारे में आप अलैहिस्सलाम ने लोगों को क्या तालीम दी गई थी? क्या तस्लीस की तालीम दी गई थी या कोई और, तो उन यहूदियों ने मुझे ख़त लिखे उत्तर तक मेरे पास मौजूद हैं, और उन ख़तों में वर्णन किया कि तौरेत में तस्लीस की तालीम का नाम-ओ-निशान नहीं बल्कि ख़ुदा तआला के बारे में तौरेत की वही तालीम है जो क़ुरआन की तालीम है। अतः अफ़सोस है ऐसी क़ौम पर जो ऐसे एतेक़ाद पर अड़ी बैठी है कि न तो वह तालीम तौरेत में मौजूद है और न क़ुरआन शरीफ़ में है बल्कि सच तो यह है कि तस्लीस की तालीम इंजील में भी नहीं।" (चशमा मसीही रूहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 373)

यह बात किसी पहलू से दरुस्त नहीं ठहर सकती कि वर्तमान के पादरियों के सिवा कोई और भी दज्जाल है

आप अलैहिस्सलाम ने पादरियों को इस ज़माना का दज्जाल साबित किया। वह दज्जाल जिसके ख़ुरूज की भविष्यवाणी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाई थी और बताया था कि इस से इस्लाम को नुक़्सान पहुंचेगा लेकिन मसीह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के दम से वह हलाक होगा। फिर अंग्रेज़ मसीह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु को अपने साथ कैसे मिला सकते थे। अतः यह कितना खोखला एतराज़ है कि अंग्रेज़ों ने हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद महदी माहूद अलैहिस्सलाम को खड़ा किया था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"लुग़त में दज्जाल झूठों के गिरोह को कहते हैं जो बातिल को हक़ के साथ मख़लूत कर देते हैं और ख़लकुल्लाह के गुमराह करने के लिए मकर और तलबीस को काम

में लाते हैं।अब मैं दावा के साथ कहता हूँ कि मुताबिक़ मंशा-ए-मुस्लिम की हदीस के जो अभी मैं वर्णन कराया हूँ अगर हम हज़रत-ए-आदम की पैदाइश से आज तक बज़रीया उन समस्त तहरीरी माध्यमों के जो हमें मिले हैं दुनिया के समस्त ऐसे लोगों की हालत पर नज़र डालें जिन्हों ने दज्जाल का अपने ज़िम्मा काम लिया था तो इस ज़माना के पादरियों की दज्जालीत की नज़ीर हरगिज़ हम को नहीं मिलेगी।" (इज़ाला औहाम रूहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 362)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "दज्जाल बहुत गुज़रे हैं और शायद आगे भी हों परंतु वह दज्जाल अकबर जिनका दजल ख़ुदा के नज़दीक ऐसा मकरूह है कि क़रीब है जो इस से आसमान टुकड़े टुकड़े हो जाएं यही गिरोह मुश्त--ए-ख़ाक को ख़ुदा बनाने वाला है।" (अंजाम-ए-आथम रूहानी ख़ज़ायन भाग 11 पृष्ठ 46)

पादरियों को इस्लाम की तब्लीग़ और इस्लामी बरकात और निशानात के मुक़ाबला की दावत

हम बड़े अदब से पूछना चाहते हैं कि क्या अंग्रेज़ ऐसे शख़्स से कोई गठजोड़ कर सकते थे जिसने उन के पादरियों का नातिक़ा बंद कर रखा हो। बपतस्मा लिया हुआ देसी पादरी हो या वलायती किसी की मजाल नहीं थी कि आप मुक़ाबिल पर मुँह खोल सके। अतः अंग्रेज़ों का ऐसे शख़्स से नबुव्वत का दावा करवाना जिस ने उन के पादरियों की बोलती बंद कर दी हो, उनका जीना दोभर कर दिया हो किस क़दर उपहास जनक बात है। सय्यदना हज़रत मसीहमौऊद अलैहिस्सलाम ने किस तरह पादरियों को इस्लाम का पैग़ाम पहुंचाया, किस तरह उनको चैलेंज पर चैलेंज दिया, बार-बार मुक़ाबला की दावत दी, उन्हें किस तरह ललकारा, उस की एक छोटी सी झलक पेश है। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

चौथी अलामत इस विनीत की सच्चाई की यह है कि इस आजिज़ ने बारह हज़ार के क़रीब ख़त और इश्तेहार इल्हामी बरकात के मुक़ाबला के लिए मज़ाहिब ग़ैर की तरफ़ रवाना किए विशेषता पादरियों में से शायद एक भी नामी पादरी यूरोप और अमरीका और हिंदुस्तान में बाक़ी नहीं रहा होगा की तरफ़ ख़त रजिस्ट्री करके न भेजा हो परंतु सब पर हक़ का रोब छा गया।" (आईना कमालात,रूहानी ख़ज़ायन भाग 5 पृष्ठ 347)

"सोला हज़ार के क़रीब लोग हिंदुस्तान और इंग्लिस्तान और जर्मन और फ्रांस और रूस और रुम में पंडितों और यहूदियों के फ़िकीहों और मजूसियों के पेशरूओं और ईसाइयों के पादरियों और क़िस्सीसों और बिशपों में से मौजूद हैं जिनको रजिस्ट्री करा कर इस मज़मून के ख़त भेजे गए कि दरहक़ीक़त दुनिया में दीन-ए-इस्लाम ही सच्चा है और दूसरे समस्त धर्म असलीयत और हक़्क़ानियत से दूर जा पड़े हैं। किसी को मुख़ालिफ़ों में से अगर शक हो तो हमारे मुक़ाबिल पर आए और एक साल तक रह कर दीन-ए-इस्लाम के निशान हमसे मुलाहिज़ा करे और अगर हम ख़ता पर निकलें तो हमसे बहिसाब दो सौ रुपया माहवारी हर्जाना अपने एक वर्ष का लेले अन्यथा हम इस से कुछ नहीं मांगते केवल दीन-ए-इस्लाम क़बूल करे और अगर चाहे तो अपनी तसल्ली के लिए वह रुपया किसी बैंक में जमा करले लेकिन किसी ने इस तरफ़ रुख नहीं किया।"

(शहादतुल क़ुरआन रूहानी ख़ज़ायन भाग 6 पृष्ठ 369)

क्या मशरिक़ से लेकर मग़रिब की इंतेहा तक कोई पादरी है जो ख़ुदाई निशान मेरे मुक़ाबिल पर दिखला सके।

"ख़ुदा तआला ने वह रोब मुझे बख़्शा है कि कोई पादरी मेरे मुक़ाबले पर नहीं आ सकता। या तो वह ज़माना था कि वे लोग बाज़ारों में चिल्ला चिल्ला कर कहते कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से कोई चमत्कार नहीं हुआ और क़ुरआन शरीफ़ में कोई भविष्यवाणी नहीं और हे ख़ुदा तआला ने ऐसा उन पर रोब डाला कि इस तरफ़ मुख नहीं करते गोया वे सब इस जहान से रुख़स्त हो गए। और मुझे क़सम है उस ज़ात की जिसके हाथ में मेरी जान है कि अगर कोई पादरी इस मुक़ाबला के लिए मेरी तरफ़ मुख करे तो ख़ुदा उस को सख़्त ज़लील करेगा और इस अज़ाब में ग्रस्त करेगा जिसकी नज़ीर नहीं होगी और उसको ताक़त नहीं होगी कि जो कुछ में दिखलाता हूँ वह अपने फ़र्ज़ी ख़ुदा की ताक़त और क़ुव्वत से दिखला सके और मेरे लिए ख़ुदा आसमान से भी निशान बरसाएगा और ज़मीन से भी। मैं सच्च सच्च कहता हूँ कि ये बरकत ग़ैर क़ौमों को नहीं दी गई। अतः क्या समस्त ज़मीन में मशरिक़ से लेकर मग़रिब की इंतेहा तक कोई पादरी है जो ख़ुदाई निशान मेरे मुक़ाबिल पर दिखला सके। हमने मैदान फ़तह कर लिया है। किसी की मजाल नहीं जो हमारे मुक़ाबिल पर आए।" (हकीकतुल वह्यी रूहानी ख़ज़ायन भाग 22 पृष्ठ 348)

हे यूरोप और अमरीका के पादरियो मुझसे मुक़ाबला करो कि कौन ज़िंदा है? मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमया कि मसीह अलैहिस्सलाम

"आओ हम से मुक़ाबला करो कि दोनों शख़्स अर्थात हज़रत मसीह और हज़रत सय्यदना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से रुहानी बरकात और इफ़ाज़ात की दृष्टि से ज़िंदा कौन है .. हे यूरोप और अमरीका के पादरियो क्यों बिला वजह शोर डाल रखा है। तुम जानते हो कि मैं एक इन्सान हूँ जो करोड़ों इन्सानों में मशहूर हूँ। आओ मेरे साथ मुक़ाबला करो। मुझ में और तुम में एक बरस की मोहलत हो। अगर इस मुद्दत में ख़ुदा के निशान और ख़ुदा की क़ुदरत नुमा भविष्यवाणी तुम्हारे हाथ से ज़ाहिर हुईं और मैं तुम से कमतर रहा तो मैं मान लूँगा कि मसीह इब्ने मरियम ख़ुदा है लेकिन अगर इस सच्चे ख़ुदा ने जिसको मैं जानता हूँ और आप लोग नहीं जानते मुझे विजयी किया और आप लोगों का मज़हब आसमानी निशानों से वंचित साबित हुआ तो तुम पर लाज़िम होगा कि इस दीन को स्वीकार करो।" (तिरयाकुल क़ुलूब रूहानी ख़ज़ायन भाग 15 पृष्ठ 160)

तौरेत और इंजील को हिकमत से परिपूर्ण ज्ञान में सूरः फ़ातिहा के साथ भी मुक़ाबला करने की ताक़त नहीं

क़ुरआन और तौरेत और इंजील की तालीम का मुवाज़ना करने और क़ुरआन की तालीम की फ़ौक़ियत साबित करने के बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया।

"तौरेत और इंजील क़ुरआन का क्या मुक़ाबला करेंगी। यदि केवल क़ुरआन शरीफ़ की पहली सूरत के साथ ही मुक़ाबला करना चाहिए अर्थात सूरः फ़ातिहा के साथ जो केवल सात आयतें हैं और जिस तर्तीब अंसब और तरकीब मुहकम और निज़ाम-ए-फ़ित्रती से इस सूरत में सदहा हक़ायक़ और दीन के मआरिफ़ और रुहानी हिकमतें दर्ज हैं उनको मूसा की किताब या यसू के चंद पृष्ठ इंजील से निकालने चाहिए तो जबकि सारी उम्र कोशिश करें तब भी यह कोशिश लाहासिल होगी। और ये बात लाफ़-ओ-ग़ज़ाफ नहीं बल्कि वाक़ई और हक़ीक़ी यही बात है कि तौरेत और इंजील को उलूम-ए- हिकमिया में सूरः फ़ातिहा के साथ भी मुक़ाबला करने की ताक़त नहीं। हम क्या करें और क्योंकर फ़ैसला हो? पादरी साहिबान हमारी कोई बात भी नहीं मानते। भला अगर वह अपनी तौरेत या इंजील को मआरिफ़ और हक़ायक़ के वर्णन करने और ख़वास कलाम-ए-उलूहियत ज़ाहिर करने में कामिल समझते हैं तो हम बतौर इनाम पाँच सौ रुपया नक़द उनको देने के लिए तय्यार हैं अगर वे अपनी समस्त मोट किताबों में से जो सत्तर के क़रीब होंगी वे हक़ायक़ और मआरिफ़ शरीयत और मुरत्तिब और मुंतज़िम मौती हिक्मत-ओ-जवाहर मार्फ़त-ओ-ख़वास कलाम उलूहियत दिखला सकें जो सूरः फ़ातिहा में से हम पेश करें। और अगर यह रुपया थोड़ा हो तो जिस क़दर हमारे लिए संभव होगा हम उनकी दरख़ास्त पर बढ़ा देंगे।" (सिराजुद्दीन ईसाई के चार प्रश्नों का उत्तर रूहानी ख़ज़ायन भाग 12 पृष्ठ 360)

हम बहुत हैरान हैं कि जिसने ईसाइयत के बढ़ते हुए मुँह-ज़ोर सेलाब को तुरंत रोक दिया, जिसने इस्लाम के ख़ुदा को ज़िंदा ख़ुदा और इस्लाम के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ज़िंदा रसूल और इस्लाम की किताब क़ुरआन-ए-करीम को ज़िंदा किताब साबित कर दिया और ईसाइयत के ख़ुदा और उसके रसूल और उसकी किताब को मुर्दा साबित कर दिया, उस के विषय में मौलवी हज़रात कहते हैं कि उसे ईसाइयों ने अपने लाभ के लिए खड़ा किया था। क्या इस्लाम के ऐसे ज़बरदस्त पहलवान को जिसने ईसाइयत के अक़ाइद बातिला को धूल मिट्टी की तरह उड़ा दिया, ईसाई अपने साथ मिला सकते हैं? अंग्रेज़ बेवक़ूफ़ थे या ये मौलवी हज़रात और उनकी अंधी तक़लीद में मुंसिफ़ का संपादक झूठ बोल रहा है पाठक ख़ुद ही फ़ैसला करें। (मंसूर अहमद मसरूर) ★ ★ ★

128वां जलसा सालाना क़ादियान
29, 30, और 31 दिसम्बर 2023 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 128वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 29,30,31 दिसंबर 2023 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है। जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन।

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

★ ★ ★

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा

सितंबर, अक्तूबर 2022 ई.

30 सितंबर 2022 ई (शुक्रवार के दिन)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह 5 बजकर 50 मिनट पर मस्जिद फ़तह अज़ीम में तशरीफ़ ला कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले आए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक मुलाहिज़ा फ़रमाई और हिदायात से नवाज़ा, हुज़ूर अनवर की मुख़्तलिफ़ दफ़्तरी उमूर की अंजाम दही में व्यस्तता रही।

आज जुम्मतुल मुबारक का दिन था। आज का यह दिन कई लिहाज़ से एक इतिहासिक दिन है जो हमेशाअहमदियत की तारीख़ में याद रखा जाएगा। आज हुज़ूर अनवर के ख़ुतबा जुमा के साथ डाक्टर अलेक्जेंडर डोवी के ज़ायन (zion) शहर में मस्जिद फ़तह अज़ीम का उद्घाटन हो रहा था। फिर ज़ायन की ज़मीन से ख़लीफ़तुल मसीह का यह पहला ऐसा ख़ुतबा जुमा है जो एम.टी.ए इंटरनैशनल के माध्यम से सारी दुनिया में सीधे लाईव प्रसारित हो रहा था।

इस से पूर्व अमरीका के पूर्वी भाग वाशिंगटन डी.सी, harrisburg और साउथ के इलाक़ा हेविसटन और पश्चिमी भाग लास एंजलीज़ से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ख़ुतबात जुमा.एम.टी. ए. पर लाईव प्रसारित हो चुके हैं।

डाक्टर डोई ने तो यह कहा था कि उसके अपने बसाए हुए शहर ज़ायन से इस्लाम की आवाज़ हमेशा के लिए दबा दी जाएगी। इस्लाम का कोई नाम-लेवा भी नहीं होगा।

आज अल्लाह-तआला के फ़ज़ल से हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़लीफ़ा की ज़बान से इलहाम "फ़तह अज़ीम" के अंतर्गत, न केवल डोई के इस शहर में इस्लाम की आवाज़ गूंज रही है बल्कि यहां से डोई के देश अमरीका में भी यह आवाज़ गूंज रही है और सबसे बढ़कर यह कि यह आवाज़ यहां से समस्त संसार में, सारी दुनिया में, देश देश, स्थान स्थान, बस्ती-बस्ती सुनाई दे रही है। अतः आज इस शहर का चप्पा चप्पा और यहां के दिन रात का लम्हा लम्हा हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सदाक़त पर गवाही दे रहा है। سبحان اللہ وبحمدہ سبحان اللہ العظیم۔

नमाज़-ए-जुमा में ज़ायन (zion) के इलावा अमरीका की मुख़्तलिफ़ दूसरी जमाअतों से अहबाब बड़े लंबे और तवील फ़ासले तै करके शामिल होने के लिए पहुंचे थे। शामिल होने वालों में एक बड़ी संख्या ऐसी थी जो एक हज़ार से अढ़ाई हज़ार मील तक का सफ़र तै करके आई थी। नमाज़-ए-जुमा में शामिल होने वालों की संख्या दो हज़ार से अधिक थी।

अमरीका के इलावा बर्तानिया, जर्मनी, स्वीडन, ब्राज़ील, गयाना, सरेनाम, पाकिस्तान, कबाबीर, कैनेडा से जमाअती नुमाइंदगान और दूसरे अहबाब इस मस्जिद के उद्घाटन में शमूलियत के लिए पहुंचे थे।

प्रोग्राम के मताबिक 1 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद फ़तह अज़ीम तशरीफ़ लाए और ख़ुतबा जुमा इरशाद फ़रमाया। (इस ख़ुतबा जुमा का ख़ुलासा अख़बार बदर 6 अक्तूबर 2022 ई. अंक नंबर 40 में प्रकाशित हो चुका है और उसका मुकम्मल मतन इसी शुमारा में मुलाहिज़ा फ़रमाएं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का यह ख़ुतबा जुमा 1 बजकर 50 मिनट तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर ने नमाज़-ए-जुमा के साथ नमाज़-ए-अस्र जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

फ़ैमिली मुलाक़ातें और विचार

प्रोग्राम के मुताबिक़ 6 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और फ़ैमिली मुलाक़ातों का प्रोग्राम शुरू हुआ। आज शाम के इस सैशन में 32 फ़ैमिलीज़ के 156 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का शरफ़ पाया। इन सभी फ़ैमिली ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर ने अज़राह शफ़क़त तालीम हासिल करने वाले विद्यार्थीओं को क़लम अता फ़रमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट अता फ़रमाएं।

मुलाक़ात करने वाली ये फ़ैमिलीज़ zion की स्थानीय जमातों के इलावा निम्नलिखित आठ जमाअतों और मुक़ामात से आई थीं।

chicago
st. louis
detroit
oshk osh
milwaukee
miami
los angeles
bay point

शामिल हैं। miami से आने वाली फ़ैमिली 1404 मील, लास अंजलिज़ से आने वाली 2046 मील और bay point से आने वाली फ़ैमिलीज़ 2142 मील का सफ़र तै कर के पहुंची थीं।

आज अक्सर अहबाब मर्द और महिलाओं की हुज़ूर अनवर के साथ पहली मुलाक़ात थी। उनके चेहरों पर एक ग़ैरमामूली ख़ुशी थी। प्रत्येक की अपनी अपनी भावनाएं थीं। मुलाक़ात कर के बाहर निकलते तो एक दूसरे को ख़ुशी के आँसूओं के साथ मुबारकबाद देते। अल्लाह तआला उन के लिए यह ख़ुशियां दाइमी बना दे और ये उन अत्यधिक मुबारक लमहात की हमेशा के लिए हिफ़ाज़त करने वाले हों।

* मुलाक़ात करने वालों में एक दोस्त शब्बीर अहमद साहिब शिकागो से आए थे कहने लगे कि आज हम किस क़दर ख़ुश-क़िस्मत हैं कि हमें हुज़ूर से मिलने का अवसर मिला है। प्रत्येक इन्सान को यह अवसर नसीब नहीं होता। हमें ये नेअमत और सआदत पाकिस्तान में अल्लाह की ख़ातिर ज़ुलम-ओ-सितम का सामना करने के बाद मिली है।

* एक दोस्त अदील अहमद साहिब डेट्रॉइट से आए थे कहने लगे मैं आज बहुत ख़ुश हूँ और ख़ुशनसीब भी हूँ कि मेरे बच्चों की ख़ुदा के चुने हुए ख़लीफ़ा से मुलाक़ात हुई।

* अंसर हसन साहिब लास से 2046 मील का सफ़र तै कर के मुलाक़ात के लिए आए थे। मुलाक़ात के बाद उन्होंने बताया कि साल 2013 ई. में, मैंने एक ख़ाब देखा था कि मैं हुज़ूर अनवर से एक साहिली इलाक़े के क़रीब मिल रहा था। मैंने यह ख़ाब उस वक़्त देखा था जब मैं पाकिस्तान में था और मेरे अमरीका आने का कोई संभावना भी नहीं थी। लेकिन अल्लाह तआला ने मुझे अमरीका तक पहुंचा दिया और अब एक साहिली इलाक़े के क़रीब ही मेरी हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात हुई है। यह अल्लाह तआला का मुझ पर ऐसा फ़ज़ल है कि मैं जितना भी शुक्र अदा करूँ कम है।

* जमात शिकागो से मुलाक़ात के लिए आने वाले दोस्त वक़ास अहमद साहिब ने बताया कि मेरी ख़ुशी की उस समय सीमा न रही कि जब मैं दफ़्तर में दाख़िल हुआ तो हुज़ूर अनवर को मालूम था कि मेरे माता कौन हैं। मैं हैरान रह गया क्योंकि यह मेरी ज़िंदगी की पहली मुलाक़ात थी।

* उसमान ज़िया जमाअत St. louis से आए थे। मुलाक़ात के बाद कहने लगे कि मैंने अपनी आँखों से देखा है कि हुज़ूर अनवर के बाबरकत वजूद में जलाल है।

मैंने नूर ही देखा है।

* सलमान अहमद साहिब जो जमाअत शिकागो से आए थे कहने लगे कि मेरे पास शब्द नहीं हैं कि मैं कुछ वर्णन कर सकूँ। बस यही कहता हूँ कि अल्लाह तआला का ख़ास फ़ज़ल है कि मैंने मुलाक़ात की सआदत पाई है और मैंने हुज़ूर अनवर से दुआएं हासिल कीं। हुज़ूर अनवर ने हमें बहुत दुआएं दी।

मुलाक़ातों का याः प्रोग्राम आठ बज कर बीस मिनट तक जारी रहा। इसके बाद 8:30 बजे हुज़ूर अनवर ने मस्जिद फ़तह अज़ीम में तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब-ओ-इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपनी क़ियामगाह पर तशरीफ़ ले गए।

1 अक्तूबर 2022 ई शनिवार का दिन

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह पाँच बज कर 50 मिनट पर मस्जिद फ़तह अज़ीम तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर ने डाक मुलाहिज़ा फ़रमाई। यहां अमरीका के इस यात्रा के दौरान दुनिया के मुख़्तलिफ़ देशों से रोज़ाना बज़रीया Fax और ई मेल के ज़रीया ख़ुतूत और रिपोर्टस मौसूल होती हैं। यहां अमरीका के अहबाब की तरफ़ से ख़ुतूत और मुख़्तलिफ़ शोबा जात की रिपोर्टस भी हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में पेश होती हैं। हुज़ूर अनवर इन ख़ुतूत और रिपोर्टस को मुलाहिज़ा फ़रमाते हैं और हिदायात से नवाज़ते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 1 बजकर 30 मिनट पर मस्जिद फ़तह अज़ीम तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर-ओ-अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

एक लेखक महिला को इंटरव्यू

प्रोग्राम के मुताबिक़ पाँच बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ नुमाइश हाल में तशरीफ़ लाए जहां “lake county newssun” अख़बार की एक लेखिका महिला yadira sanchez olson साहिबा हुज़ूर अनवर से इंटरव्यू के लिए आई हुई थीं।

इस लेखिका ने पहला सवाल यह किया कि इस दौर में जब प्रत्येक तरफ़ बहुत ज़्यादा ख़ौफ़, जरायम, बे-घर होना और ख़ुराक की कमी और अदम तहफ़्फ़ुज़ है तो आपका क्या पैग़ाम है ताकि ख़ौफ़ कम हो? इसके जवाब में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : बानी सिलसिला अहमदिया ने फ़रमाया है कि मेरे आने का उद्देश्य लोगों को उनके ख़ालिक़ के क़रीब करना है। उनके पैदा करने वाले तक पहुंचाना है और दूसरा यह कि दुनिया के लोगों को समझाना है कि वह आपस में एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा करें। अगर आप लोगों को उनके हुक़ूक़ देते हैं तो फिर कोई जुर्म या बे-घर होना या ख़ुराक का अदम तहफ़्फ़ुज़ नहीं होना चाहिए।

सहाफ़ी ने सवाल किया कि आप नौजवानों को अपने ईमान पर क़ायम रहने के लिए क्या पैग़ाम देना चाहते हैं? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : नौजवानों को अपने बुज़ुर्गों की दीन और ईमान की बातें सुननी चाहिए और उनसे दीन और ईमान की बारीकियां सीखनी चाहिए। बच्चे के लिए माता पिता से सब कुछ सीखना एक फ़ित्री अमल है। माता पिता से दीन भी सीखना चाहिए।

सहाफ़ी के इस सवाल के जवाब में कि “क्या आपके ख़्याल में समस्त मज़ाहिब और लोगों के लिए अमन के हुसूल का कोई फ़ार्मूला है? क्या समस्त मज़ाहिब मिलकर अमन के लिए काम कर सकते हैं? “हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अगर दुनिया यह समझ ले कि समस्त लोगों को अल्लाह तआला ने ही पैदा किया है और हमारी पैदाइश का उद्देश्य एक दूसरे को मारना या तबाह करना नहीं है और यह कि समस्त मज़ाहिब अल्लाह तआला की तरफ़ से आए हैं तो फिर आप ये भी समझ लेंगी कि समस्त अंबिया और समस्त मज़ाहिब के संस्थापक ने भविष्यवाणी की थी कि आख़िरी ज़माना में एक नबी आएगा जो समस्त मज़ाहिब को मुत्तहिद कर देगा। हमारा विश्वास है कि वह शख़्स जिसके बारे में समस्त मज़ाहिब की संस्थापकों ने भविष्यवाणी की है वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं और फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भविष्यवाणी की कि मेरे पैरोकार इस्लाम की हक़ीक़ी तालीम को भूल जाऐंगे फिर उस वक़्त एक मुस्लेह आएगा जो मेरी उम्मत में से होगा और हमारा यक़ीन है कि ये मुस्लेह सिलसिला अहमदिया के संस्थापक हैं।

एक प्रोफ़ैसर की हुज़ूर से मुलाक़ात

इसके बाद डाक्टर craig consodine ने हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात की। मौसूफ़ हेवसटन में rice यूनीवर्सिटी में प्रोफ़ैसर हैं।

हुज़ूर अनवर ने मौजूदा जंगी हालात का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि यह इन्सानियत की तबाही की तरफ़ जा रहे हैं। बाअज़ मग़रिबी लीडर्ज़ अपने इक़दाम में इस हद तक आगे जा चुके हैं कि पीछे हटने के लिए तैयार नहीं। अब कुछ एशियाई लीडर उन्हें नरम करने और तनाज़ा को कम करने की कोशिश कर रहे हैं।

डाक्टर craig ने कहा कि मैंने एक किताब लिखी है जिसमें अहमदिया जमाअत और हुज़ूर के बारे में लिखा है। मेरी किताब का पैग़ाम मुहब्बत है। जबकि मैं एक ईसाई हूँ लेकिन मुझे अहमदिया जमाअत से लगाओ है और लगाओ की वजह मुहब्बत ही है। आपका पैग़ाम

“मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी नहीं” मेरे लिए एक ख़ास पैग़ाम है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि यह वह पैग़ाम है जिसे प्रत्येक भूल रहा है। दुनिया उस पैग़ाम को भूल गई है।

हुज़ूर ने फ़रमाया आप ईसाई हैं और हम मुस्लमान हैं लेकिन हम सब इन्सान तो हैं। कम से कम हमें बतौर इन्सान एक दूसरे का एहतराम करना चाहिए। अगर हमें एक दूसरे का एहतराम करने का एहसास हो जाए तो अमन मुहब्बत और हम-आहंगी होगी।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : हमने यहां दुनिया के इस हिस्से में लफ़्ज़ आज़ादी को ग़लत समझा है। हम समझते हैं कि आज़ादी का मतलब है कि हम जो चाहें हमें कहने का हक़ है। हम जो चाहें करने में आज़ाद हैं। ज़रूरी नहीं कि हम दूसरे का सम्मान करें। यही वजह है कि अब हम बुनियादी बातों अमन, रवादारी और हम-आहंगी से हट रहे हैं।

एक डाक्टर की मुलाक़ात

इसके बाद डाक्टर क़तरीना लांटोस् (ओdr.katrina lantos) ने हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात की। वह lantos foundation for human rights and justice की सदर हैं और यह यूनाईटिड स्टेटस कमीशन इंटरनैशनल रेलेजीस फ़्रीडम की साबिक़ चेयर और नायब सदर रही हैं।

उन्हों ने कहा कि हुज़ूर से मुलाक़ात करके एक ग़ैरमामूली ख़ास अनुभव हासिल होता है। हम हुज़ूर की तरफ़ से जो नूर और हिक्मत है अपनी ज़िंदगी में अपने अंदर महसूस करते हैं और हुज़ूर की सोहबत में रह कर यह महसूस होता है कि हमारे दिन और हमारे हफ़्ते बेहतर होते जाते हैं।

डाक्टर कतरीना ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और डोई के दरमयान मुबाहला का वर्णन करते हुए कहा मुबाहला की यह कहानी हैरत-अंगेज़ कहानी है कि सिलसिला अहमदिया के संस्थापक ख़ुदा पर तवक्कुल करते हुए मुख़ालिफ़त और ग़लाज़त के मुक़ाबला में कामयाब हुए।

इस पर हुज़ूर ने फ़रमाया आप ख़ुद भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कामयाबी का निशान हैं कि आप जमाअत की मदद कर रहे हैं। आप प्रत्येक जगह हमारा पैग़ाम पहुंचा रहे हैं। आप जहां भी जाती हैं दुनिया को बताती हैं कि हमारी जमाअत वह वाहिद जमाअत है जो हक़ीक़ी अर्थों में मुहब्बत की तब्लीग़ करती है और ख़ुद भी इस पर अमल पैरा है।

मौसूफ़ा ने पाकिस्तान में जमाअत के मुख़ालेफ़ाना हालात पर अफ़सोस का इज़हार किया और कहा कि अब मुआमला ज़ुलम से भी बदतर हो गया है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : अब मौलवी कहते हैं कि हमारी औरतों का हमल साक़ित कर दिया जाए। वह मिस्र के फ़िरऔन से भी बदतर हो चुके हैं। जैसा कि फ़िरऔन ने कहा था कि मिस्र में किसी भी नए पैदा होने वाले बच्चे को क़तल कर देना चाहिए।

उन्हों ने अर्ज़ किया कि यह हैरत-अंगेज़ बात है कि आपकी जमाअत बुराई का जवाब बुराई से नहीं देती। नफ़रत का जवाब नफ़रत से नहीं देती।

इस पर हुज़ूर ने फ़रमाया कि हम इसी तर्ज़ पर जवाब तो दे सकते हैं हम ज़्यादा मुनज़्ज़म हैं लेकिन हम ऐसा नहीं करते क्योंकि हक़ीक़ी इस्लामी तालीम यह नहीं है।

चौदह सरकरदा अफ़राद की इजतेमाई मुलाक़ात

इस प्रोग्राम के मुताबिक़ निम्नलिखित 14 सरकरदा लोगों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ इजतेमाई तौर पर मुलाक़ात की सआदत हासिल की।

शेष आगे ...

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 08 Thursday 05 October 2023 Issue No. 40

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

"मुझ को काफ़िर कह के अपने कुफ़्र पर करते हैं मोहर
यह तो है सब शक्ल उनकी हम तो हैं आईना दार"

(हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादियानी मसीह मौऊद और मह्दी माहूद अलैहिस्सलाम की कविता)

जमाअत अहमदिया मुस्लिमा पर अख़बार मुंसिफ़ हैदराबाद के आरोपों का उत्तर (भाग - 3)

पिछले दो अंकों से हम अख़बार"मुंसिफ़' हैदराबाद के, जमात अहमदिया के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम पर एतराज़ात का उत्तर दे रहे हैं। एतराज़ात की तफ़सील और इस की पृष्ठभूमि 17 अगस्त के अंक में देखा जा सकता है। मुंसिफ़ ने एक एतराज़ यह किया है कि सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम ने अंग्रेज़ों के साथ मिल कर साज़िश की थी। नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं)। हमने दलायल और सबूतों के साथ यह स्पष्ट किया था कि साज़िश तो बहुत दूर की बात है आप का पादरियों के साथ मेल मिलाप और उठना बैठना भी ऐसा ही नामुमकिन था जैसे सूरज का मग़रिब से तलूअ होना। इस की बड़ी वजह यह थी कि वह इस्लाम और बानी इस्लाम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को गालियां देते थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उनके मज़हब के ख़िलाफ़ ऐसा अज़ीमुश्शान जिहाद किया कि चौदह सौ साल में इस की नज़ीर पेश नहीं की जा सकती। क्या अंग्रेज़ ऐसे शख़्स को अपने मुफ़ादात के लिए खड़ा कर सकते हैं जो उन के मज़हब की ईंट से ईंट बजा दे? ईसाइयत के ख़िलाफ़ आप अज़ीमुश्शान जिहाद की एक अदना झलक हम ने अपने शब्दों में वर्णन की थी। आज हम इस विषय में आप अलैहिस्सलाम के कुछ इर्शादात पेश करेंगे।

मसीह के नाम पर यह विनीत भेजा गयाता सलीबी एतेक़ाद को पाश पाश कर दिया जाए।

हदीस शरीफ़ يَكْسِرُ الصَّلِيْبَ وَيَقْتُلُ الْخِنْزِيْرَ के तहत सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम का ख़ुदाई मिशन यह था कि आप ईसाइयत का खण्डन करें और इस्लाम की खोई हुई अज़मत को फिर से क़ायम करें। अतः ग़ौर का मुक़ाम है कि क्या अंग्रेज़ ऐसे शख़्स को खड़ा कर सकते हैं जिसका फ़र्ज़ मंसबी ही सलीबी एतेक़ाद को पाश पाश कर देना हो। हक़ीक़त यह है कि आप मसीह और महदी का मन्सब और एक उम्मती नबी होने का मुक़ाम अल्लाह तआला की ओर से मिला था। यह आरोप अत्यधिक उपहासजनक है कि अंग्रेज़ों ने कह कर आप अलैहिस्सलाम से नबुव्वत का दावा करवाया। सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम अपने काम और अपने मन्सब को किन शब्दों में वर्णन फ़रमाते हैं मुलाहिज़ा फ़रमाएं।

"इस आजिज़ को और बुज़ुर्गों की फ़ित्रती समानता से अतिरिक्त जिसकी तफ़सील बराहीन-ए-अहमदिया में तफ़सील के साथ लिखे है हज़रत मसीह की फ़ित्रत से एक विशेष समानता है और इसी फ़ित्रती समानता की वजह से मसीह के नाम पर यह आजिज़ भेजा गयाता सलीबी एतेक़ाद को पाश पाश कर दिया जाए। अतः मैं सलीब के तोड़ने और ख़िंज़ीरों के क़तल करने के लिए भेजा गया हूँ। मैं आसमान से उतरा हूँ इन पाक फ़रिश्तों के साथ जो मेरे दाएं बाएं थे। जिनको मेरा ख़ुदा जो मेरे साथ है मेरे काम के पूरा करने के लिए हर एक मज़बूत दिल में दाख़िल करेगा बल्कि कर रहा है और अगर मैं चुप भी रहूं और मेरी क़लम लिखने से रुकी भी रहे तब भी वह फ़रिश्ते जो मेरे साथ उतरे हैं अपना काम बंद नहीं कर सकते और उनके हाथ में बड़े बड़े गुर्ज़ें हैं जो सलीब तोड़ने और मख़लूक़ परस्ती की हैकल कुचलने के लिए दिए गए हैं।"

(फ़तह इस्लाम रूहानी ख़ज़ायन भाग 3, पृष्ठ 11 हाशिया)

मसीह जो सलीब को तोड़ेगा तो फिर क़ियामत तक उसका जोड़ नहीं होगा।

हज़रत मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "सलीब के तोड़ने से यह समझना कि सलीब की लकड़ी या सोने चांदी की सलीबें तोड़ दी जाएँगी यह सख़्त ग़लती है इस किस्म की सलीबें तो हमेशा इस्लामी जंगों में टूटती रही हैं बल्कि इस से मतलब यह है कि मसीह मौऊद सलीबी अक़ीदा को तोड़ देगा और बाद उसके दुनिया में सलीबी अक़ीदा का नशो-ओ-नुमा नहीं होगा ऐसा टूटेगा कि फिर क़ियामत तक उस का जोड़ नहीं होगा।" (हकीतुल वह्यी रुहानी ख़ज़ायन भाग 22 पृष्ठ 324)

इस्लाम की ज़िंदगी ईसा अलैहिस्सलाम के मरने में है

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अंग्रेज़ों के ख़ुदा को वफ़ात याफताह साबित कर दिया। क़ुरआन-ए-मजीद की दृष्टि से, हदीसों की दृष्टि से, बाइबल की दृष्टि से, तारीख़ी हक़ायक़ की दृष्टि से। और उनकी क़ब्र तक बता दी कि श्रीनगर मुहल्ला खानियार में है। क्या अंग्रेज़ ऐसे शख़्स को अपने मुफ़ाद के लिए खड़ा कर सकते हैं जो उन के ख़ुदा को ही वफ़ात याफताह साबित करके उनके मज़हब को ज़िंदा दफ़ना दे? अतः ऐसे झूठे बे बुनियाद आरोपों से मुंसिफ़ को बचना चाहिए। इस विषय में हम आप अलैहिस्सलाम एक इरशाद निम्नलिखित में पेश करते हैं। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"मैं बड़े ज़ोर से और पूरे यक़ीन और बसीरत से कहता हूँ कि अल्लाह तआला ने इरादा फ़रमाया है कि दूसरे मज़ाहिब को मिटा दे और इस्लाम को ग़लबा और क़ुव्वत दे। अब कोई हाथ और ताक़त नहीं जो ख़ुदा तआला के इस इरादा का मुक़ाबला करे। वह فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ है। मुसलमानो याद रखो अल्लाह तआला ने मेरे ज़रीया तुम्हें यह ख़बर दे दी है और मैं ने अपना संदेश पहुंचा दिया है अब इस को सुनना न

शेष पृष्ठ 8 पर

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad